श्रीराधा–जन्माष्टमी–व्रत–महोत्सव

की

प्रचीनता, महिमा और पूजा–विधि

हनुमानप्रसाद पोद्दार

श्रीराधा

श्रीराधा–जन्माष्टमी–व्रत–महोत्सव

की

प्रचीनता, महिमा और पूजा–विधि

सम्पादक

हनुमानप्रसाद पोद्दार

RADHA-JANAMASTMI-VRAT-MAHOTSAV

By

Hanuman Prasad Poddar

प्रकाशक

गीतावाटिका प्रकाशन

पो०– गीतावाटिका (गोरखपुर)

पिन–२७३००६

दूरभाष : (०५५१) ३१२४४२, ३१७३२६

E-Mail:- rasendu@vsnl.com

प्रथम संस्करण–राधाष्टमी सं० २०२५ वि०

द्वितीय संस्करण—२०५८ वि०

मूल्य–पाँच रुपये

निवेदन

भगवती श्रीराधाजीके सम्बन्धमें कई प्रकारकी बातें कही जाती हैं। कोई उन्हें अत्यन्त आधुनिक कालकी कल्पना मानते हैं, कोई भक्तों तथा कवियोंके मनकी वस्तु कहते हैं। कई लोग इन्हें ऐतिहासिक मानते हैं, कई लोग सर्वथा नहीं मानते। राधाष्टमी–व्रत–महोत्सव आदिको भी आधुनिक बतलाते हैं। इसीलिये लोग प्रायः पूछते रहते हैं। अतः प्राचीन ग्रन्थोंके आधारपर श्रीराधाजीको ऐतिहासिकता एवं उनके स्वरूप, महत्त्व और प्राकट्यके काल—तिथि, वार, समय आदिके साथ ही महोत्सवकी महिमा तथा पूजा–विधि आदिका संकलन तथा प्रतिपादन इस पुस्तिकाके रूपमें पाठकोंकी सेवामें उपस्थित किया जा रहा है। इससे बहुत–से भ्रम मिटकर कई विषयोंकी जानकारी हो जायगी और इसमें लिखे अनुसार जानकर, मानकर तथा तदनुसार पूजा आदिका सत्प्रयास करके पाठक श्रीराधाजीकी कृपा प्राप्त करेंगे—ऐसी आशा है।

प्रमादवश कोई भूल रह गयी हो तो उसके ध्यानमें आनेपर या कृपापूर्वक बतानेपर अगले संस्करणमें उसका सुधार किया जा सकता है।

हनुमानप्रसाद पोद्दार

विषय–सूची

रेखा–चित्र

श्रीश्रीराधिकायै नमः

श्रीराधा–जन्म–व्रत–महोत्सवकी प्राचीनता

दिशि दिशि रचयन्तीं संचरन्नेत्रलक्ष्मीविलसितखुरलीभिः खञ्जरीटस्य खेलाम्।
हृदयमधुपमल्लीं बल्लवाधीशसूनोरखिलगुणगभीरां राधिकामर्चयामि।।
हरि–पदनख–कोटीपृष्ठपर्यन्तसीमातटमपि कलयन्तीं प्राणकोटेरभीष्टम्।
प्रमुदितमदिराक्षीवृन्दवैदग्धिदीक्षागुरुमतिगुरुकीर्तिं राधिकामर्चयामि।।

व्रत–महोत्सव–महिमाका एक प्राचीन प्रसंग

जैसे सच्चिदानन्दघन भगवान् श्रीकृष्ण नित्य हैं, समय–समयपर इस भूमण्डलमें उनका आविर्भाव–तिरोभाव हुआ करता है, इसी प्रकार सच्चिदानन्दमयी भगवती श्रीराधाजी भी नित्य हैं। वास्तवमें भगवान्‌की निजस्वरूपा–शक्ति होनेके कारण वे भगवान्‌से सर्वथा अभिन्न हैं और समय–समयपर लीलाके लिये आविर्भूत–तिरोभूत हुआ करती हैं। नारदपाञ्चरात्रमें कहा गया है––

यथा ब्रह्मस्वरूपश्च श्रीकृष्णः प्रकृतेः परः।
तथा ब्रह्मस्वरूपा च निर्लिप्ता प्रकृतेः परा।।
आविर्भावस्तिरोभावस्तस्याः कालेन नारद।
न कृत्रिमा च सा नित्या सत्यरूपा यथा हरिः।।

(२। ३। ५१, ५४)

'जैसे श्रीकृष्ण ब्रह्मस्वरूप हैं तथा प्रकृतिसे पर हैं, वैसे ही श्रीराधाजी भी ब्रह्मस्वरूप, निर्लिप्त तथा प्रकृतिसे पर हैं। भगवान्‌की भाँति ही उनका समय–समयपर आविर्भाव–तिरोभाव हुआ करता है। वस्तुतः वे भी श्रीहरिके सदृश ही अकृत्रिम, नित्य और सत्यस्वरूप हैं।'

इसी प्रकार इनका आविर्भाव–महोत्सव तथा उसका महत्त्व भी प्राचीनतम तथा नित्य है। पद्मपुराण–ब्रह्मखण्डके सप्तम अध्यायमें श्रीनारद–ब्रह्माके संवादरूपमें एक इतिहास मिलता है, उसमें नारदजीके पूछनेपर ब्रह्माजी राधा–जन्माष्टमी–व्रतके महान् माहात्म्यका वर्णन करते

हुए एक प्राचीन प्रसंग सुनाते हैं। वे कहते हैं—

"वत्स नारद ! पहले सत्ययुगमें एक मृगनयनी, शुभांगी, चारुहासिनी, अतिसुन्दरी लीलावती नामकी वारांगना थी। उसने बहुत बड़े-बड़े कठोर पाप किये थे। एक दिन धनकी लालसासे वह अपने नगरसे निकलकर एक दूसरे नगरमें गयी। वहाँ उसने एक जगह बहुत लोगोंको एकत्र देखा। वे लोग एक सुन्दर देवालयमें राधाष्टमी-व्रतका उत्सव मना रहे थे। गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, वस्त्र, तथा नाना प्रकारके फल आदिसे भक्तिपूर्वक श्रीराधाकी श्रेष्ठ मूर्तिकी पूजा कर रहे थे। कोई गा रहे थे, कोई नाच रहे थे, कोई उत्तम स्तव-पाठ कर रहे थे। कोई बड़ी प्रसन्नतासे ताल, मृदंग और वेणु बजा रहे थे। इस प्रकार उन लोगोंको महोत्सव-परायण देखकर वारागंनाने कौतूहलपूर्वक उन लोगोंके पास जाकर पूछा—

"पुण्यात्माजनों ! आप हर्षमें भरे यह क्या कर रहे हैं ? मैं विनयपूर्वक पूछ रही हूँ, कृपा करके बताइये।" इसके उत्तरमें उन राधाव्रतियोंने कहा—

"भाद्रमासके शुक्लपक्षकी अष्टमीको दिनके समय श्रीराधाजीका वृषभानुके यहाँ यज्ञभूमिमें प्राकट्य हुआ था। हमलोग उसीका व्रत करके महोत्सव मना रहे हैं। इस व्रतसे मनुष्योंके बहुत बड़े-बड़े पापोंका तुरंत नाश हो जाता है।" उनकी बात सुनकर वारांगना लीलावतीने भी व्रत करनेका निश्चय करके व्रत किया। दैवयोगसे उसको सर्पने डँस लिया, इससे उसकी मृत्यु हो गयी। उसने बड़े पाप किये थे, अतएव हाथोंमें पाश तथा मुद्गर लिये भयानक यमदूत आ गये और उसे डाँटने लगे। इसी बीच शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाले विष्णुदूतोंने आकर चक्रसे यमपाशको काट दिया। वह वारांगना सर्वथा पापमुक्त हो गयी और उसे वे विष्णुदूत विमानपर चढ़ाकर 'गोलोक' नामक मनोहर दिव्य विष्णुपुरमें ले गये।"

ब्रह्माजीने फिर कहा—"इस प्रकार पापोंका नाश करनेवाले और श्रीराधामाधवको अत्यन्त प्रिय राधाष्टमी-व्रतको जो लोग नहीं करते हैं, वे मूढ़बुद्धि हैं। उन स्त्री-पुरुषोंको यमलोकमें जाकर नरकोंमें गिरना पड़ता है और फिर पृथ्वीपर जन्म लेनेपर घोर दुःख भोगने पड़ते हैं।"

वास्तवमें श्रीराधाजी भगवान् श्रीकृष्णकी ही अभिन्न मूर्ति हैं। इनकी पूजा सदासे होती आयी है और होनी चाहिये। इस पुस्तिकामें उनके स्वरूप, तत्त्व, महात्म्य, महोत्सव तथा व्रत-विधिके सम्बन्धमें प्राचीन ग्रन्थोंके कुछ आंशिक उद्धरण मूलसहित और कुछका केवल हिंदी अनुवाद दिया जा

रहा है। इनको पढ़कर भारतके जन–जनको चाहिये कि वह सर्वत्र श्रीराधा–जन्माष्टमी–व्रत करने तथा महोत्सव मनानेका सत्प्रयास करे। शुद्ध हृदयसे उत्साहपूर्वक स्वयं मनाये तथा लोगोंको प्रेरणा देकर मनवाये। इसमें उसका और जगत्‌के उन जीवोंका, जो इस व्रत–महोत्सवका सेवन करेंगे, कल्याण होगा, इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

श्रीराधा–पूजाकी अनिवार्य आवश्य

श्रीमद्‌देवीभागवतमें श्रीनारायणने नारदजीके प्रति ...ायै स्वाहा' इस षडक्षर राधामन्त्रकी अति प्राचीन परम्परा तथा विलक्षण महिमाके वर्णन–प्रसंगमें श्रीराधा–पूजाकी अनिवार्यता तथा परम कर्त्तव्यताका निरूपण करते हुए कहा है—

कृष्णार्चायां नाधिकारो यतो राधार्चनं विना।
वैष्णवैः सकलैस्तस्मात् कर्त्तव्यं राधिकार्चनम्।।
कृष्णप्राणाधिदेवी सा तदधीनो विभुर्यतः।
रासेश्वरी तस्य नित्यं तया हीनो न तिष्ठति।।
राध्नोति सकलान् कामांस्तस्माद् राधेति कीर्त्तिता।।

(देवीभागवत ६। ५०। १६–१८)

"श्रीराधाकी पूजा न की जाय तो मनुष्य श्रीकृष्णकी पूजाका अधिकार नहीं रखता। अतएव समस्त वैष्णवोंको चाहिये कि वे भगवती श्रीराधाकी अर्चना अवश्य करें। ये श्रीराधा भगवान् श्रीकृष्णके प्राणोंकी अधिष्ठात्री देवी हैं। इसलिये भगवान् इनके अधीन रहते हैं। ये भगवान्‌के रा:ाकी नित्य अधीश्वरी हैं। इन श्रीराधाके बिना भगवान् श्रीकृष्ण क्षणभर भी नहीं ठहर सकते। ये सम्पूर्ण कामनाओंका राधन (साधन) करती हैं, इसी कारण इन देवीका नाम श्री'राधा' कहा गया है। (इनकी पूजा अनिवार्य है)।"

इन श्रीराधाजीका प्राकट्य भाद्रपद–शुक्लपक्षकी अष्टमीको मध्याह्नके समय श्रीवृषभानुपुरी (बरसाना) या उनके ननिहाल रावलग्राममें हुआ था। कुछ महानुभाव प्रातःकाल प्राकट्य हुआ मानते हैं। सम्भव है, कल्पभेदसे उनकी मान्यता सत्य हो; पर प्राचीन पुराणोंमें मध्याह्नका ही उल्लेख मिलता है। नीचेके विवरणसे इसे आप जान सकेंगे।

———

श्रीराधा–जन्माष्टमी–व्रत–महोत्सवका माहात्म्य

(१)

(पद्मपुराण उत्तरखण्ड* अध्याय १६२–१६३ से)

(देवर्षि नारद और भगवान् सदाशिवका संवाद)

श्रीराधाका प्राकट्य और स्थान–महिमा

भाद्रपद महीनेमें कृष्णपक्षमें जब श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी आती है, उसके बाद शुक्लपक्षकी अष्टमीको हरिप्रिया श्रीराधिकाजीका जन्म हुआ। वृषभानुपुरी नामकी एक सब रत्नोंसे भरी सुन्दर नगरी है, जहाँ सुवर्ण और मणि–माणिक्यसे सुसज्जित विचित्र रंगके भवन और प्रांगण हैं। नाना प्रकारकी ध्वजा–पताका आदिसे विचित्र दीखनेवाली, चित्रोंसे सुशोभित वह नगरी अणिमा–महिमा आदि आठों प्रकारकी सिद्धियोंके द्वारा प्राप्त होनेवाले सुख और ऐश्वर्यसे परिपूर्ण तथा परम मनोहर है। वह चिदानन्दस्वरूप तथा चिदानन्द प्रदान करनेवाली है। उस नगरीमें आनन्द–केलि करनेवाली नारियाँ सदा निवास करती हैं। विचित्र वेष–भूषासे युक्त, विचित्र वस्त्र–परिधानसे शोभित, नाना प्रकारके वेषसे विचित्र अंगवाली तथा आमोद प्रदान करनेवाली स्त्रियाँ वहाँ रहती हैं। उसी नगरीमें सारे शुभ लक्षणोंसे युक्त, विनोदशीला, अतिसुन्दरी, जगत्के मनको मोहनेवाली, अतिगुह्यरूपा श्रीराधा नामकी देवी प्रकट हुई। हे मुनिवर ! उनका स्वरूप अतिगुह्य है, वह मूढ़ लोगों और असंतोंके सामने कथनीय नहीं है।

श्रीराधाके स्वरूप–तत्त्व, रूप–गुण एवं सौन्दर्य–माधुर्यकी महिमा

नारदजी बोले—हे महाभाग ! मैं आपका दास हूँ, प्रणाम करके पूछता हूँ, बतलाइयें। श्रीराधादेवी लक्ष्मी हैं या देवपत्नी हैं, महालक्ष्मी हैं या

---

* ये दो अध्याय बम्बई वेंकटेश्वर तथा कलकत्तेके मोर–संस्करणमें नहीं छपे हैं। बंगला लिपिमें प्रकाशित पद्मपुराणमें हैं। 'शब्दकल्पद्रुम' नामक प्रसिद्ध कोशमें दोनों अध्याय पूरेके पूरे उद्धृत हैं। श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव महोदयके द्वारा सम्पादित हिंदी विश्वकोषमें इनका सार अध्यायोंकी संख्या देते हुए छपा है। अन्य ग्रन्थोंमें भी है।

सरस्वती हैं ? क्या वे अन्तरंग विद्या हैं या वैष्णवी प्रकृति है ? कहिये—वे वेदकन्या हैं, देवकन्या हैं अथवा मुनिकन्या हैं ?

सदाशिव बोले—हे मुनिवर ! अन्य किसी लक्ष्मीकी बात क्या कहें, कोटि–कोटि महालक्ष्मी उनके चरणकमलकी शोभाके सामने तुच्छ कही जाती हैं। हे नारदजी ! एक मुँहसे मैं अधिक क्या कहूँ ? मैं तो श्रीराधाके रूप, लावण्य और गुण आदिका वर्णन करनेमें अपनेको असमर्थ पाता हूँ। उनके रूप आदिकी महिमा कहनेमें भी लज्जित हो रहा हूँ। तीनों लोकोंमें कोई भी ऐसा समर्थ नहीं है जो उनके रूपादिका वर्णन करके पार पा सके। उनकी रूप–माधुरी जगत्को मोहनेवाले श्रीकृष्णको भी मोहित करनेवाली है। यदि अनन्त मुखसे चाहूँ तो भी उनका वर्णन करनेकी मुझमें क्षमता नहीं हैं। एक लाख लक्ष्मी जिसकी दासी हो, वह 'लाक्षकी' कहलाती है, इस प्रकारकी एक लाख लाक्षकी रमणियोंमें भी परम ऐश्वर्यमयी श्रीराधिकाजी हैं।

नारदजी बोले—हे प्रभो ! श्रीराधिकाजीके जन्मका माहात्म्य सब प्रकारसे श्रेष्ठ है। हे भक्तवत्सल ! उसको मैं पूरा–पूरा सुनना चाहता हूँ।

हे महाभाग ! सब व्रतोंमें श्रेष्ठ व्रत श्रीराधा–अष्टमीके विषयमें मुझको सुनाइये। श्रीराधाजीका ध्यान कैसे किया जाता है? उनकी पूजा अथवा स्तुति किस प्रकार होती है ? यह सब मुझसे कहिये। हे सदाशिव ! उनकी चर्या, पूजा–विधान तथा अर्चन–विशेष—सब कुछ मैं सुनना चाहता हूँ, कहिये; यन्त्र–मन्त्र, स्तुति–ध्यान, पूजाका स्थान, पूजाका विधान तथा तत्तत्सेवा–अर्चनाकी विधि बतलाइये।

श्रीराधा–जन्माष्टमीका महोत्सव मनाना और पूजा करना अत्यन्त आवश्यक है

शिवजी बोले—वृषभानुपुरीके राजा वृषभानु महान् उदार थे। वे महान् कुलमें उत्पन्न तथा सब शास्त्रोंके ज्ञाता थे। अणिमा–महिमा आदि आठ प्रकारकी सिद्धियोंसे युक्त, श्रीमान्, धनी और उदारचेता थे। संयमी, कुलीन, सद्विचारसे युक्त तथा श्रीकृष्णके आराधक थे। उनकी भार्या श्रीमती श्रीकीर्तिदा थीं। वे रूप–यौवनसे सम्पन्न थीं और महान् राजकुलमें उत्पन्न हुई थीं। महालक्ष्मीके समान भव्य रूपवाली और परम सुन्दरी थीं। वे सर्व विद्याओं और गुणोंसे युक्त, कृष्णस्वरूपा तथा महापतिव्रता थीं। उनके ही गर्भमें शुभदा भाद्रपदकी शुक्लाष्टमीको मध्याह्न कालमें श्रीवृन्दावनेश्वरी

श्रीराधिकाजी प्रकट हुईं। वेद–शास्त्र तथा पुराणादिमें जिनका 'कृष्णवल्लभा' कहकर गुणगान हुआ है, वे श्रीराधा सदा श्रीकृष्णको आनन्द प्रदान करनेवाली, साध्वी, कृष्णप्रिया थीं। हे महाभाग ! अब मुझसे श्रीराधा–जन्म–महोत्सवमें जो भजन–पूजन, अनुष्ठान आदि कर्तव्य हैं, उन्हें सुनिये। सदा श्रीराधा–ज़न्माष्टमीके दिन व्रत रखकर उनकी पूजा करनी चाहिये। उस पूजामें ध्यान आदिकी सारी विधि मैं क्रमशः कहूँगा। सर्वदा पश्चिमद्वार श्रीराधाकृष्णके मन्दिरमें ध्वजा, पुष्पमाल्य, वस्त्र, पताका, तोरणादि नाना प्रकारके मंगल द्रव्योंके द्वारा यथाविधि पूजा होती है। स्तुतिपूर्वक सुवासित गन्ध, पुष्प, धूपादिसे सुगन्धित करके उस मन्दिरके बीचमें पाँच रंगके चूर्णसे मण्डप बनाकर उसके भीतर षोडश दलके आकारका कमलयन्त्र बनाये। उस कमलके मध्यमें दिव्यासनपर श्रीराधा–कृष्णकी युगल–मूर्ति पश्चिमाभिमुख स्थापित करके ध्यान, पाद्य–अर्घ्यादिके द्वारा क्रमपूर्वक भलीभाँति उपासना करके सजातीय भक्तोंके साथ अपनी शक्तिके अनुसार पूजाकी सामग्री लेकर उनका भक्त भक्तिपूर्वक सदा संयतचित्त होकर पूजा करे।

श्रीराधा–माधव–युगलका ध्यान

हेमेन्दीवरकान्तिमञ्जुलतरं श्रीमज्जगन्मोहनं
नित्याभिर्ललितादिभिः परिवृतं सन्नीलपीताम्बरम्।
नानाभूषणभूषणांगमधुरं कैशोररूपं युगं
गान्धर्वाजनमव्ययं सुललितं नित्यं शरण्यं भजे।।

(पद्म० उत्तर० १६२। ३१)

'जिनकी स्वर्ण और नील कमलके समान अति सुन्दर कान्ति है, जो जगत्‌को मोहित करनेवाली श्रीसे सम्पन्न हैं, नित्य ललिता आदि सखियोंसे परिवृत हैं, सुन्दर नीले और पीत वस्त्र धारण किये हुए हैं तथा जिनके नाना प्रकारके आभूषणोंसे आभूषित अंगोंकी कान्ति अति मधुर है, उन अव्यय, सुललित, युगलकिशोररूप श्रीराधाकृष्णके हम नित्य शरणापन्न हैं।' इस प्रकार युगलमूर्तिका ध्यान करके शालग्राममें अथवा मनोमयी मूर्तिमें या साक्षात् पाषाण आदिकी मूर्तिमें पुनः सम्यक् रूपसे अर्चना करे। तब उनके

सामने क्रमशः मण्डलमें आयी हुई सखियोंकी ध्यान–पाद्य–अर्घ्यादिके द्वारा प्रयत्नपूर्वक पूजा* करे।

पूजन, महाप्रसाद–वितरण, महोत्सवकी महिमा और महान् फल

(यहाँ कमलके रूपमें मण्डलका एक यन्त्र बनाया जाता है, जिसे 'योगपीठ' कहते हैं। उसका पूरा वर्णन इसी पुस्तकमें 'योगपीठ–पूजा' शीर्षकमें दिया गया है। उसीके अनुसार यहाँ मण्डलस्थ सखियोंकी पूजा करनी चाहिये।)

इस प्रकार श्रीराधाष्टमीके दिन यन्त्रमें सखियोंका पूजन करे तथा समागत सारे कृष्णभक्त वैष्णवोंकी यत्नपूर्वक पूजा करे। इस प्रकार प्रतिवर्ष श्रीराधाकृष्णकी पूजा, उनके मण्डलकी पूजा श्रीकृष्णके रास–महोत्सवके अवसरपर भी यत्नपूर्वक करे। श्रीकृष्णमें एकान्त प्रीति रखनेवाले पुरुषके द्वारा अवश्य पूजा कराये।

भगवान्‌को निवेदन किये गये गन्ध–पुष्प–माल्य तथा चन्दन आदिके द्वारा समागत कृष्णभक्तोंकी आराधना करे। अभक्तोंको शामिल करना तथा महाप्रसाद देना वर्जित है। श्रीराधाजीकी भक्तिमें दत्तचित्त होकर सजातीय भक्तवृन्दको साथ लेकर प्रयत्नपूर्वक, उनके लिये प्रस्तुत नैवेद्य, गन्ध–पुंष्प–माल्य तथा चन्दन आदिके द्वारा दिनमें महोत्सव करे। पूजा करके दिनके अन्तमें भक्तोंके साथ आनन्दपूर्वक चरणोदक लेकर महाप्रसाद भक्षण करे। श्रीराधाकृष्णका स्मरण करते हुए रातमें जागरण करे। चाँदी और सोनेकी सुसंस्कृत मूर्ति रखकर उसकी पूजा करे। दूसरी कोई वार्ता न करते हुए नारी तथा बन्धु–बान्धवोंके साथ पुराणादिसे प्रयत्नपूर्वक इष्टदेवता श्रीराधाकृष्णके कथा–कीर्तनका श्रवण करे। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक श्रीराधा–जन्माष्टमीके इस शुभानुष्ठानको करता है, उसके विषयमें सब देवतालोग कहते हैं कि 'यही मनुष्य भूतलमें राधाभक्त है।' *इस अष्टमीको दिन–रात एक–एक पहरपर विधिपूर्वक श्रीराधामाधवकी पूजा करे।*

---

* इस मण्डलमें स्थित श्रीराधाकी महाभाग्यवती बहुत–सी सखियोंके नाम, स्थान, पूजन और नमस्कारका प्रसंग यहाँ स्थानाभावसे नहीं दिया जा रहा है। उसे इसी पुस्तकके परिशिष्टमें देखना चाहिये।

श्रीराधाकृष्णमें अनुरक्त रसिकजनोंके साथ आलाप करते हुए बारम्बार श्रीराधाकृष्ण[१]को याद करे। इस प्रकार महोत्सव करके परम आनन्दित होकर विधिपूर्वक साष्टांग दण्ड–प्रणाम करे। जो पुरुष अथवा नारी राधाभक्तिपरायण होकर श्रीराधा–जन्म–महोत्सव करता है, वह श्रीराधाकृष्णके सांनिध्यमें श्रीवृन्दावनमें वास करता है, वह राधाभक्तिपरायण होकर व्रजवासी बनता है। श्रीराधा–जन्म–महोत्सवका गुण–कीर्तन करनेसे मनुष्य भव–बन्धनसे मुक्त हो जाता है।

'राधा' नामकी तथा राधाकी महिमा, राधाका भजन करनेवालोंका भजन स्वयं शिवजी करते हैं—ऐसा कथन, राधाभक्तोंका महत्त्व, राधा–जन्माष्टमी व्रतकी महिमा

जो मनुष्य 'राधा–राधा' कहता है तथा स्मरण करता है, वह सब तीर्थोंके संस्कारसे युक्त होकर सब प्रकारकी विद्याकी प्राप्तिमें प्रयत्नवान् बनता है। जो 'राधा–राधा' कहता है, 'राधा–राधा' कहकर पूजा करता है, 'राधा–राधा' में जिसकी निष्ठा है, जो 'राधा–राधा' उच्चारण करता रहता है, वह महाभाग श्रीवृन्दावनमें श्रीराधाकी सहचरी होता है। इस विश्वब्रह्माण्डमें यह पृथ्वी धन्य है, पृथ्वीपर वृन्दावनपुरी धन्य है। वृन्दावनमें सती श्रीराधाजी धन्य हैं, जिनका ध्यान बड़े–बड़े मुनिवर करते हैं। जो ब्रह्मा आदि देवताओंकी परमाराध्या हैं, जिनकी सेवा देवतालोग दूरसे ही करते रहते हैं। उन श्रीराधिकाजीको जो भजता है, उसको मैं भजता हूँ। हे महाभाग ! उनका कथा–कीर्तन करो, उनके उत्तम मन्त्रका जप करो और रातदिन 'राधा–राधा' बोलते हुए नाम कीर्तन करो। जो मनुष्य कृष्णके साथ राधाका (अर्थात् राधेकृष्ण, राधेकृष्ण) नाम–कीर्तन करता है, उसके माहात्म्यका वर्णन मैं नहीं कर सकता और न उसका पार पा सकता हूँ। गंगा, गया और सरस्वती सदा हितकारिणी नहीं होती हैं; परंतु 'राधा' नाम–स्मरण कदापि निष्फल नहीं जाता, यह सब तीर्थोंका फल प्रदान करता है। श्रीराधाजी सर्वतीर्थमयी हैं तथा सर्वैश्वर्यमयी हैं। श्रीराधा–भक्तके घरसे कभी लक्ष्मी विमुख नहीं होती। हे नारद ! उसके घर श्रीराधाजीके साथ श्रीकृष्ण वास करते हैं। श्रीराधाकृष्ण जिनके इष्ट देवता हैं, उनके लिये यह श्रेष्ठ व्रत है। उसके घरमें श्रीहरि देहसे, मनसे कदापि पृथक् नहीं होते। यह सब सुनकर मुनिश्रेष्ठ नारदजीने प्रणत होकर यथोक्त रीतिसे श्रीराधाष्टमीमें यजन–पूजन

किया। जो मनुष्य इस लोकमें यह राधा–जन्माष्टमी–व्रतकी कथा श्रवण करता है, वह सुखी, मानी, धनी और सर्वगुणसम्पन्न हो जाता है। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक श्रीराधाका मन्त्र जप करता है अथवा नाम–स्मरण करता है, वह धर्मार्थी हो तो धर्म प्राप्त करता है, अर्थार्थी हो तो धन पाता है, कामार्थी पूर्णकाम हो जाता है और मोक्षार्थीको मोक्ष प्राप्त होता है। कृष्णभक्त वैष्णव सर्वदा अनन्यशरण होकर जब श्रीराधाकी भक्ति प्राप्त करता है तो सुखी, विवेकी और निष्काम हो जाता है।

(पद्मपुराण उत्तरखण्ड अ० १६२–१६३ का कुछ अंश)

(२)

(भविष्यपुराणसे)

श्रीराधा–प्राकट्यकी तिथि और काल

वृषभानुरिति ख्यातो जज्ञे वैश्यकुलोद्भवः।
सर्वसम्पत्तिसम्पन्नः सर्वधर्मपरायणः।।
उवाह कीर्तिदानाम्नीं गोपकन्यामनिन्दिताम्।
सर्वलक्षणसम्पन्नां प्रतप्तकनकप्रभाम्।।
वृषभानुर्महाभक्तः कीर्तिदायास्तपोबलात्।
अस्माद् विनयबाहुल्यात् तत्कन्या राधिकाभवत्।।
भाद्रे मासि सिते पक्षे अष्टमी या तिथिर्भवेत्।
अस्यां दिनार्द्धेऽभिजिते नक्षत्रे चानुराधिके।।
राजलक्षणसम्पन्नां कीर्तिदासूत कन्यकाम्।
अतीवसुकुमारांगीं सितरश्मिसमप्रभाम्।
त्रैलोक्याद्भुतसौन्दर्यां दोषनिर्मुक्तविग्रहाम्।।

(भविष्यपुराण*)

"वैश्यकुलमें वृषभानु नामसे प्रसिद्ध एक राजा हो गये हैं, वे सभी सम्पदाओंसे सम्पन्न तथा सभी धर्मोंके परायण थे। उन्होंने कीर्तिदा नामकी अनिन्द्यसुन्दरी एक गोपकन्यासे विवाह किया, जो सम्पूर्ण शुभ लक्षणोंसे युक्त तथा तपाये हुए सोनेकी–सी कान्तिवाली थी। वृषभानु महान् भक्त थे। कीर्तिदाके तपोबलसे तथा विनयकी पराकाष्ठासे उनके 'राधिका' नामकी

* भविष्यपुराण बंगला लिपिमें मुद्रित संस्करण।

कन्या हुई। भाद्रपद मासके शुक्लपक्षकी अष्टमी तिथिको मध्याह्नकालमें अभिजित् मुहूर्त और अनुराधा नक्षत्रके योगमें कीर्तिदा रानीने राजचिह्नोंसे सुशोभित इस कन्याको जन्म दिया। उसके अंग–प्रत्यंग अत्यन्त सुकुमार थे, जिनसे चन्द्रमाकी–सी ज्योति निकल रही थी, उसका सौन्दर्य त्रिलोकीमें विलक्षण था और शरीर सब प्रकारके दोषोंसे सर्वथा मुक्त था।"

(३)

(गर्ग संहितासे)

श्रीराधा–प्राकट्यका कारण तथा प्राकट्य–महोत्सव

गर्गसंहितामें आता है—राजा बहुलाश्वके पूछनेपर श्रीनारदजी कहते हैं—"तुम्हारा यह कुल धन्य है; क्योंकि इसीमें राजा निमि हो चुके हैं। वे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके सर्वश्रेष्ठ भक्त थे। फिर इसी कुलमें तुम भी उत्पन्न हुए हो। अतः इसे पूर्णरूपसे गौरव प्राप्त हो गया। तुम्हारा स्वभाव बहुत ही विलक्षण है, क्योंकि तुम संसारसे सम्बन्ध रखते हुए भी त्यागी हो। अब तुम उन पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाका श्रवण करो। वह पवित्र एवं कल्याणस्वरूप है। केवल कंसका संहार ही भगवान्‌के अवतारमें हेतु नहीं है। वे पृथ्वीपर संतजनोंकी रक्षाके लिये पधारे थे। राजन् ! भगवान्‌ने ही अपनी महाशक्तिको प्रेरणा दी। अतः महाशक्तिने वृषभानुकी पत्नीके हृदयमें प्रवेश किया और वे ही 'राधिका' नामसे प्रकट हुईं। उनका अवतार एक भव्य भवनमें हुआ। वह स्थान यमुनाके तटपर निकुञ्ज–वनमें था। *उस समय भाद्रपदका महीना था। शुक्लपक्ष एवं अष्टमी तिथि थी। मध्याह्न (दोपहर) का समय था। आकाशमें मेघ छाये हुए थे।* देवताओंने उस मन्दिरपर फूलोंकी वर्षा की। वे फूल नन्दनवनसे उन्हें प्राप्त हुए थे। उस समय राधिकाजीके पृथ्वीपर प्रकट होनेपर नदियाँ स्वच्छ हो गयीं। सम्पूर्ण दिशाओंमें आनन्द फैल गया। कमलकी गन्धसे व्याप्त वायु चलने लगी, वह बड़ी ही शीतल, मनोहर और धीमी गतिसे बह रही थी। बादमें वृषभानु–पत्नी कीर्तिको कन्या दिखायी दी। शरत्कालीन चन्द्रमाकी भाँति उसकी कान्ति थी। रूप मनको हरनेवाला था। अतः वे अत्यन्त आनन्दमें भर गयीं। तुरंत उन्होंने मंगल–विधान करवाया और पुत्रीके कल्याणकी कामनासे दो लाख गौएँ ब्राह्मणोंको दान कीं। श्रेष्ठ देवताओंको भी जिनका दर्शन मिलना कठिन है; मनुष्य करोड़ों जन्मोंतक तप करते हैं, परंतु जिनका साक्षात् नहीं

कर पाते; वे ही श्रीराधिकाजी वृषभानुके यहाँ स्वयं प्रकट हुईं। गोपियोंने उनका लालन–पालन किया। यह प्रायः सभी जानते हैं। सखियाँ पालनेमें राधिकाजीको झुलाया करती थीं।

प्रेंखे खचिद्रत्नमयूखपूर्णे सुवर्णयुक्ते कृतचन्दनांगे।
आन्दोलिता सा ववृधे सखीजनैर्दिने दिने चन्द्रकलेव भाभिः।।
श्रीरासरंगस्य विकासचन्द्रिका दीपावलीभिर्वृषभानुमन्दिरे।
गोलोकचूडामणिकण्ठभूषणां ध्यात्वा परां तां भुवि पर्यटाम्यहम्।।
(गर्गसंहिता १। ८। ११–१२)

"वह पालना सुवर्णसे बनाया गया था। उसमें रत्न जड़े हुए थे। चारों ओर चन्दन छिड़का गया था। प्रतिदिन राधिकाजीका श्रीविग्रह बढ़ता जाता था। ठीक उसी प्रकार, जैसे शुक्लपक्षमें प्रतिदिन बढ़ते हुए प्रकाशसे चन्द्रमाकी कलामें विस्तार होता जाता है। जो रासमण्डलको आह्लादित करनेवाली स्वच्छ चाँदनी हैं, जिन्होंने वृषभानुके भवनको अनन्त उज्ज्वल दीपावलियोंके समान प्रकाशित कर दिया है तथा जो गोलोकमें चूडामणिके रूपमें विराजमान भगवान् श्रीकृष्णके गलेकी हार हैं, उन पूजनीय राधिकाजीका ध्यान करके मैं पृथ्वीपर विचर रहा हूँ।"

श्रीवृषभानु तथा श्रीकीर्तिजी पूर्वजन्ममें कौन थे ?

श्रीनारदजी कहते हैं—तदनन्तर बहुलाश्वके पूछनेपर नारदजीने श्रीवृषभानु तथा श्रीकीर्तिजीके पूर्वजन्म तथा वरदानका इतिहास सुनाया। देवर्षि नारदजी बोले—एक राजा नग थे। उनके यहाँ सुचन्द्र नामक पुत्रका जन्म हुआ। सुचन्द्र अत्यन्त बड़भागी थे। राजाओंके ऊपर भी उनका शासन था। वे चक्रवर्ती थे। उन्हें साक्षात् भगवान्‌का अंश माना जाता था। उनका शरीर बड़ा ही कोमल था। (अर्यमा आदि) पितरोंके यहाँ संकल्पमात्रसे तीन कन्याएँ उत्पन्न हुईं। तीनों बड़ी ही कमनीय–मूर्ति थीं। उनके नाम थे—कलावती, रत्नमाला और मेनका। कलावती सुचन्द्रके साथ ब्याही गयीं। सुचन्द्र बड़े विद्वान् और भगवान्‌के अशांवतार थे। रत्नमाला विदेह (जनक) को समर्पित कर दी गयीं और गिरिराज हिमालयने मेनकाका पाणिग्रहण किया। पितरोंने अपनी रूचिके अनुसार ब्राह्मविधिसे ये कन्याएँ दान कीं। रत्नमालासे सीताजी प्रकट हुईं। मेनकाके गर्भसे पार्वतीजीका अवतार हुआ। महामते ! इन दोनोंकी कथाएँ पुराणोंमें जगह–जगह वर्णित

हैं। तदनन्तर, पत्नी कलावतीको साथमें लेकर सुचन्द्र गोमती नदीके तटपर स्थित एक वनमें चले गये। उन्होंने ब्रह्माजीकी तपस्या की। वह तप देवताओंके वर्षसे बारह वर्षोंतक चलता रहा। पश्चात् ब्रह्माजी वहाँ पधारे और उन्होंने सुचन्द्रको वरदान दिया—

'तुमलोग मेरे साथ स्वर्गमें चलो और वहाँ नाना प्रकारके आनन्दका उपभोग करो। समय आनेपर तुम दोनों पृथ्वीपर उत्पन्न होओगे। द्वापरके अन्तमें गंगा और यमुनाके बीच, भारतवर्षमें तुम्हारा जन्म होगा। तुम्हीं दोनोंसे स्वयं परिपूर्णतम भगवान् श्रीकृष्णकी प्राण–प्रिया देवी राधिकाजी पुत्रीके रूपमें प्रकट होंगी। उसी समय तुम्हें परम धाम प्राप्त होगा।'

श्रीनारदजी कहते हैं—इस प्रकार ब्रह्माजीका वरदान हुआ। वह महान् पवित्र तथा कभी भी निष्फल होनेवाला नहीं था। अतः उसीके प्रभावसे भूमण्डलपर कीर्ति तथा वृषभानु हुए। कन्नौज देशमें एक राजा थे। भलन्दन नामसे उनकी प्रसिद्धि थी। उन्हींके यहाँ यज्ञकुण्डसे कलावतीका प्रादुर्भाव हुआ। कलावती अपने पूर्वजन्मकी सारी बातें जानती थीं। उनका स्वभाव भी बहुत विलक्षण था। सुरभानुके घर सुचन्द्रका जन्म हुआ। उस समय वे वृषभानु नामसे विख्यात हुए। उन्हें भी पहले जन्मका स्मरण था। गोपोंमें उनकी प्रधानता थी। वे इतने सुन्दर थे कि एक दूसरे कामदेव ही माने जाते थे। नन्दजीकी बुद्धि बड़ी निर्मल थी। उन्होंने दोनोंका परस्पर सम्बन्ध जोड़ दिया। उन दोनोंको पूर्वजन्मकी स्मृति तो थी ही। अतः वे दोनों चाहते भी ऐसा ही थे। जो मनुष्य इस वृषभानु और कलावतीके उपाख्यानका श्रवण करता है, वह सम्पूर्ण पापोंसे छूट जाता है। अन्तमें वह भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके परमधामका अधिकारी भी होता है।

(गर्गसंहिता १। ८)

(४)
(नारदपुराणसे)
श्रीराधा–जन्माष्टमी–व्रत

नारदपुराण पूर्वभाग अध्याय ११७ में श्रीराधा–जन्माष्टमी–व्रत करते हुए सनातन मुनिने कहा है—

'भाद्र शुक्ला अष्टमीको मनुष्य 'राधा–व्रत' करे। कलशस्थापन करके उसके ऊपर श्रीराधाकी स्वर्णमयी प्रतिमाका पूजन करना चाहिये। मध्याह्नकालमें

श्रीराधाजीका पूजन करके एकभुक्त व्रत करे। * * * विधिपूर्वक राधाष्टमी–व्रत करनेसे मनुष्य व्रजका रहस्य जान लेता है तथा राधा–परिकरोंमें निवास करता है।"

इसी प्रकार आदिपुराण, तन्त्र और अन्य कई प्राचीन ग्रन्थोंमें भी राधा–प्राकट्य तथा व्रतका वर्णन आया है।

पूजा–विधि*

पूजा आरम्भ करनेसे पूर्व पूजाका संकल्प करना चाहिये––

संकल्प––

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानामसंवत्सरे अमुकायने महामांगल्यप्रदे मासानामुत्तमे भाद्रपदमासे शुभे शुक्ले पक्षे अष्टम्यां तिथौ अमुकवासरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकामुकराशिस्थितेषु चन्द्र–भौम–बुध–गुरु–शुक्र–शनिषु सत्सु शुभे योगे शुभकरणे एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहम् अमुकनामाहम् अस्माकं सर्वेषां श्रीराधा–कृष्णचरणानुरागोपलब्धये श्रीभगवतः पूर्णपुरुषोत्तमस्य सच्चिदानन्दविग्रहस्य कोटि–कोटि–कंदर्पदर्पहरलावण्यस्य अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायकस्य श्रीकृष्णचन्द्रस्य भगवतो ह्लादिन्याः शक्तेः तस्यैव भगवतः प्राणाधिकायाः श्रीवृषभानुनन्दिन्याः श्रीराधिकाया जन्म–व्रत–महोत्सवांगत्वेन विघ्नविनाशनस्य श्रीगणनाथस्यागन्तुकानां देवविग्रहाणां च पञ्चोपचारैः श्रीराधाकृष्णसहितानां समस्तसखीनाम्

---

* धातु–पाषाणनिर्मित विग्रह हो तब तो सब वस्तुएँ यथायोग्य यथाविधि अंगोंपर अर्पण करनी चाहिये। चित्रपट हो तो पूजाकी वस्तुएँ उन्हें दिखाकर सामने रख देनी चाहिये।

इतरेषां परिकराणां च यन्त्रभावनया यथालब्धोपचारैः पूजनमहं करिष्यामि (अथवा पूजनमहं करिष्यामि तत्कार्यनिर्वर्तनाय च अमुकगोत्रोत्पन्नम् अमुकशर्माणं ब्राह्मणं तत्र आचार्यत्वेन वृणे)।

ध्यान—

हेमाभां द्विभुजां वराभयकरां नीलाम्बरेणावृतां
श्यामक्रोडविलासिनीं भगवतीं सिन्दूरपुञ्जोज्ज्वलाम्।
लोलाक्षीं नवयौवनां स्मितमुखीं बिम्बाधरां राधिकां
नित्यानन्दमयीं विलासनिलयां दिव्यांगभूषां भजे।।

"जिनके गौर अंगोंकी हेममयी आभा है, जिनके दो भुजाएँ हैं, जो दोनों हाथोंमें वर तथा अभयकी मुद्रा धारण करती हैं, नीले रंगकी साड़ी जिनके श्रीअंगोंका आवरण बनी हुई है, जो श्यामसुन्दरके अंकमें विलास करती हैं, सीमन्तगत सिन्दूरपुञ्जसे जिनकी सौन्दर्यश्री और भी उद्भासित हो उठी है, चपल नयन, नित्य नवीन तारुण्य, मुखपर मन्द हासकी छटा तथा बिम्बफलकी अरुणिमाको भी तिरस्कृत करनेवाला अधर–राग जिनका अनन्यसाधारण वैशिष्ट्य है, जो नित्य आनन्दमयी तथा विलासकी आवासभूमि हैं, जिनके अंगोंपर दिव्य आभूषण सुशोभित हैं, उन भगवती श्रीराधिकाजीका मैं भजन–ध्यान करता हूँ।"

स्वागत—

यस्या दर्शनमिच्छन्ति देवाः सर्वार्थसिद्धये।
तस्यास्ते राधिके देवि सुस्वागतमिदं वपुः।।

इस वाक्यके द्वारा श्रीराधिकाकुमारीकी सादर अभ्यर्थना करे।

आसन—

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
वरं शय्यासनं राधे कोमलं प्रतिगृह्यताम्।।

यह मन्त्र बोलकर शय्यासे हाथका संस्पर्श करा दे और श्रीराधाकुमारी सुखपूर्वक सो रही हैं—ऐसा ध्यान करे।

पाद्य—

सद्रत्नसारपात्रस्थं सर्वतीर्थोदकं शुभम्।
पादप्रक्षालनार्थं च राधे पाद्यं च गृह्यताम्।।

पवित्र पात्रमें चन्दनसहित पुष्प डालकर जल भर ले तथा यह मन्त्र बोलकर और *'एतत् पाद्यं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* उच्चारण करके चरणोंमें जल अर्पण करे अथवा पाद्यपात्र वहीं रख दे।

अर्घ्य—

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
पूतं युक्तं तीर्थतोयै राधेऽर्घ्यं प्रतिगृह्यताम्।।

पवित्र पात्रमें गन्ध, पुष्प, अक्षत, दूर्वा, शुद्ध जल भरकर उपर्युक्त मन्त्र तथा *'इदमर्घ्यं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर श्रीराधाके मस्तकपर अर्घ्यजल अर्पण करे अथवा अर्घ्यपात्र वहीं सामने रख दे।

आचमन—

आचम्यतां त्वया राधे भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि प्रसीद परमेश्वरि।।

एक दूसरे पात्रमें जल लेकर यह मन्त्र तथा *'इदमाचमनीयं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर श्रीराधाके हाथोंमें अर्पण करे या पात्र वहीं रख दे।

स्नान—

जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम्।
सुस्नापयामि राधे त्वां कुरु स्नानं व्रजेश्वरि।।

तदनन्तर पवित्र पात्रमें कर्पूर तथा चन्दनसहित गंगाजल या तीर्थजल भरकर यह मन्त्र तथा *'इदं कर्पूरमिश्रितं जलं स्नानार्थं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर स्नान कराये या पात्र वहीं रख दे।

दुग्ध—स्नान—

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

एक पात्रमें दूध डालकर उपर्युक्त मन्त्र तथा *'इदं दुग्धस्नानं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर दुग्धस्नान कराये या पात्र वही रख दे।*

दधिस्नान—

पयसस्तु समद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

एक पात्रमें दही डालकर उपर्युक्त मन्त्र तथा 'इदं दधिस्नानं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः' बोलकर दधिस्नान कराये या पात्र वहीं रख दे।

---

* दुग्ध, दधि आदिद्वारा कराये जानेवाले प्रत्येक स्नानके बाद शुद्धोदकस्नान कराये, फिर पञ्चामृत स्नानके बाद पुनः शुद्धोदकस्नान कराये। ऐसी भी विधि देखी जाती है।

(शुद्धोदकस्नान—मन्त्र अगले पृष्ठपर देखें।)

घृतस्नान—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
तुभ्यं देवि प्रदास्यामि स्नानार्थे प्रतिगृह्यताम्।।

एक पात्रमें घृत डालकर उपर्युक्त मन्त्र तथा *'इदं घृतस्नानं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर घृतस्नान कराये या पात्र वहीं रख दे।

मधुस्नान—

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थें प्रतिगृह्यताम्।।

एक पात्रमें मधु भरकर उपर्युक्त मन्त्र तथा *'इदं मधुस्नानं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर मधुस्नान कराये या मधुका पात्र वहाँ रख दे।

शर्करास्नान—

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

एक पात्रमें शर्करा रखकर उपर्युक्त मन्त्र तथा *'इदं शर्करास्नानं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर शर्करास्नान कराये या पात्र वहीं रख दे।

पञ्चामृतस्नान—

पयो दधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम्।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं व्रजेश्वरि।।

एक पात्रमें पञ्चामृत भरकर यह मन्त्र तथा *'इदं पञ्चामृतस्नानं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर पञ्चामृतसे स्नान कराये या पात्र वहीं रख दे।

शुद्धोदकस्नान—

एक पात्रमें शुद्ध गंगाजल या तीर्थजल भरकर उसमें कपूर–चन्दन डालकर *'इदं शुद्धोदकस्नानं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर शुद्धोदकसे स्नान कराये या पात्र वहीं रख दे।

वस्त्रोपवस्त्र—

अमूल्यरत्नखचितममूल्यं सूक्ष्ममेव च।
वह्निशुद्धं निर्मलं च वसनं देवि गृह्यताम्।।

यह मन्त्र तथा *'इदं परिधेयवस्त्रम् उत्तरीयवासश्च श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर बढ़िया महीन नीले रंगकी साड़ी, कञ्चुकी और

रेशमी किनारीदार ओढ़नी श्रीराधिकाजीके अर्पण करे।

मधुपर्क—

अशनं रत्नपात्रस्थं सुस्वादु सुमनोहरम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृह्यतां परमेश्वरि।।

काँसी या चाँदीके पात्रमें (तांबेका न हो) मधुपर्क (मधु, घृत, शर्करा, दधि और जल (अभावमें पुष्प, जल) लेकर उपर्युक्त मन्त्र तथा *'इदं मधुपर्कं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर मधुपर्ककी सामग्री श्रीराधाजीके मुखमें अर्पण करे या पात्र वहीं रख दे।

गन्ध—

केसरकर्पूरयुतमतीव सुरभीकृतम्।
मंगलार्हं पवित्रं च राधे गन्धं गृहाण मे।।

केसर–कपूरमिश्रित चन्दन लेकर उपर्युक्त मन्त्र तथा *'इदं गन्धं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर श्रीराधाजीके अंगोंपर लेपन करे या उन्हें अर्पण कर दे।

कुङ्कुम—

कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुंकुमेनार्चिते राधे प्रसीद परमेश्वरि।।

इस मन्त्रको तथा *'इमं कुङ्कुमं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर श्रीराधाजीके मस्तकपर कुंकुम लगा दे।

भूषण—

अमूल्यरत्ननिर्माणं केयूरवलयादिकम्।
हारं सुशोभनं राधे गृह्यतां भूषणं मम।।

इस मन्त्रको तथा *'इमानि भूषणानि श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर रत्न–स्वर्णादिनिर्मित अलंकार (हार–बाजूबंद–कड़े आदि गहने) श्रीराधिकाजीको पहना दे या अर्पण कर दे।

सिन्दूर—

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसंनिभम्।
पूजितासि मया राधे प्रसीद परमेश्वरि।।

यह मन्त्र तथा *'इदं सिन्दूरं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर श्रीराधाजीके मस्तकपर लगा दे या अर्पण कर दे।

कज्जल—

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम्।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।।

यह मन्त्र तथा *'इमं कज्जलं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर श्रीराधिकाजीके नेत्रोंमें धीरेसे अञ्जन लगा दे।

सौभाग्यसूत्र—

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम्।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा।।

इस मन्त्रको तथा *'इदं सौभाग्यसूत्रं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर स्वर्णमणियुक्त सूत्र श्रीराधाजीके गलेमें बाँध दे।

सुगन्धतैल (इत्र)—

चन्दनागुरुकर्पूरनानापुष्पसमुद्भवान्।
कस्तुर्यादिसुगन्धांश्च गृहाण परमेश्वरि।।

यह मन्त्र तथा *'इमानि तैलानि सुगन्धद्रव्याणि श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर बढ़िया असली इत्र तथा कस्तूरी आदि श्रीराधाजीके श्रीअंगपर लगा दे।

परिमलद्रव्य—

हरिद्रारञ्जिते राधे सुखसौभाग्यदायिनि।
तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र सुखशान्ति प्रयच्छ मे।।

इस मन्त्र तथा *'इमानि परिमलद्रव्याणि श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर हरिद्राचूर्ण, अबीर, गुलाल आदि श्रीराधाजीके अर्पण कर दे।

अक्षत—

रञ्जिताः कुंकुमौघेन अक्षताश्चातिशोभनाः।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव शोभने।।

इस मन्त्रको तथा *'एतान् अक्षतान् तण्डुलान् श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर कुंकुम लगे हुए चावल श्रीराधिकाजीके अर्पण कर दे।

पुष्प—

मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेमानि राधिके।।

इस मन्त्रको तथा *'इमानि पुष्पाणि श्रीरधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर पुष्प (कमलपुष्प भी) श्रीराधाजीके श्रीचरणोंपर अर्पण करे।

पुष्पमाला—

सुरभिपुष्पनिचयैर्ग्रथितां शुभमालिकाम्।
ददामि तव शोभार्थे गृहाण परमेश्वरि।।

इस मन्त्रको तथा *'इमां पुष्पमालां श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर पुष्पोंकी माला श्रीराधाजीके गलेमें पहना दे।

तदनन्तर निम्नलिखित आठ नामोंका उच्चारण करते हुए आठ पुष्पाञ्जलियाँ श्रीराधाजीके अर्पण करे—

'श्रीराधिकायै नमः। श्रीरासेश्वर्यै नमः। श्रीकृष्णकान्तायै नमः। नित्यनिकुञ्जेश्वर्यै नमः। वृषभानुसुतायै नमः। गान्धर्विकायै नमः। वृन्दावनमहेश्वर्यै नमः। श्रीकृष्णप्राणाधिकायै देव्यै नमः।

धूप—

दशांगगुग्गुलुं धूपं चन्दनागुरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम्।।

इस मन्त्रको तथा *'इमं धूपं श्रीराधिकायै आघ्रापयामि नमः'* बोलकर पीतल या चाँदीकी धूपदानीमें रक्खा हुआ पवित्र धूप श्रीराधिकाजीको सुँघा दे।

दीप—

अन्धकारे भयहरममूल्यमणिशोभितम्।
दीपं दास्यामि शोभाढ्यं सुप्रीता भव सर्वदा।।

इस मन्त्रको तथा *'इमं दीपं दर्शयामि श्रीराधिकायै नमः'* बोलकर पवित्र गोघृत या पवित्र तेलके द्वारा जलाया हुआ दीपक श्रीराधिकाजीको दिखा दे।

नैवेद्य—

तदनन्तर हाथ धोकर, पवित्र थालियों और कटोरोंमें भोज्य–पदार्थ सजाकर धुली हुई पवित्र चौकी या पाटेपर रख दे और एक दूसरे शुद्ध पात्रमें पीनेके लिये सुवासित जल भरकर रख दे। फिर *'अस्त्राय फट्'* मन्त्र बोलकर चक्रमुद्रा दिखलाते हुए नैवेद्यका संरक्षण करे। तदनन्तर किसी शुद्ध पात्रमें भरे हुए जलमें 'यं' इस वायु–बीजका १२ बार जप करके उस जलके द्वारा नैवेद्यका प्रोक्षण करे और दाहिने हाथमें 'रं' बीजका स्मरण करते हुए दाहिने हाथकी पीठपर बायाँ हाथ रखकर इस वह्नि–बीज 'रं' का उच्चारण करे। इसके द्वारा नैवेद्यकी शुष्कताका दोष दूर होता है। फिर बायें हाथकी हथेलीपर अमृतबीज 'वं' का स्मरण करके बायें हाथकी पीठपर दायाँ हाथ रखकर नैवेद्यको अमृत–धारासे सिक्त करे। पीछे चन्दन और पुष्प लेकर

'एते गन्धपुष्पे श्रीराधिकायै नमः' बोलकर नैवेद्य तथा श्रीराधाका क्रमशः अर्चन करे। फिर बायें हाथसे नैवेद्यके पात्रोंका स्पर्श करके दाहिने हाथसे गन्ध, पुष्प और जल लेकर *'इदं नैवेद्यं श्रीराधिकायै कल्पयामि नमः'* बोलकर जलको पृथ्वीपर छोड़ दे। तदनन्तर प्रत्येक नैवेद्यके पात्रमें एक-एक पुष्प रख दे। फिर दोनों हाथोंसे नैवेद्य-पात्रको उठाकर भक्ति और दीनताके साथ *'इदं नैवेद्यं श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर नैवेद्य अर्पण करे। तदनन्तर *'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'*—बोलकर श्रीराधाजीके हाथमें जल देकर बायें हाथसे *'ग्रासमुद्रा'* दिखाये। फिर *'प्राणाय स्वाहा', 'अपानाय स्वाहा', 'व्यानाय स्वाहा', 'उदानाय स्वाहा', 'समानाय स्वाहा'*—इन पाँच मन्त्रोंका क्रमशः उच्चारण करके प्राणादि पाँच मुद्राएँ दिखाये।

ऋतुफल—

द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादि फलं मे प्रतिगृह्यताम्।।

इस मन्त्रको तथा *'इमानि फलानि श्रीराधाकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर भाँति-भाँतिके मधुर फल अर्पण करे।

पानीयोदक-आचमन—

कंसारिवल्लभे देव्याचमनं कुरु राधिके।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव शोभने।।

तदनन्तर सुवासित निर्मल जल किसी पवित्र पात्रमें भरकर उपर्युक्त मन्त्र तथा *'एतत् पानीयोदकम् आचमनं च श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर श्रीराधाजीके अर्पण करे।

अखण्ड ऋतुफल—

नारिकेलं च नारंगममृतं कदलीं तथा।
उर्वारुकं च गृह्यन्तां फलान्येतानि राधिके।।

उपर्युक्त मन्त्र तथा *'एतानि अखण्डफलानि श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर विविध अखण्ड फल श्रीराधिकाजीके अर्पण करे।

ताम्बूल-पूगीफल—

एलालवंगकस्तूरीकर्पूरैश्च सुवासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि व्रजेश्वरि।।

यह मन्त्र तथा *'एतां ताम्बूलवीटिकां श्रीराधिकायै निवेदयामि नमः'* बोलकर पानका बीड़ा अर्पण करे।
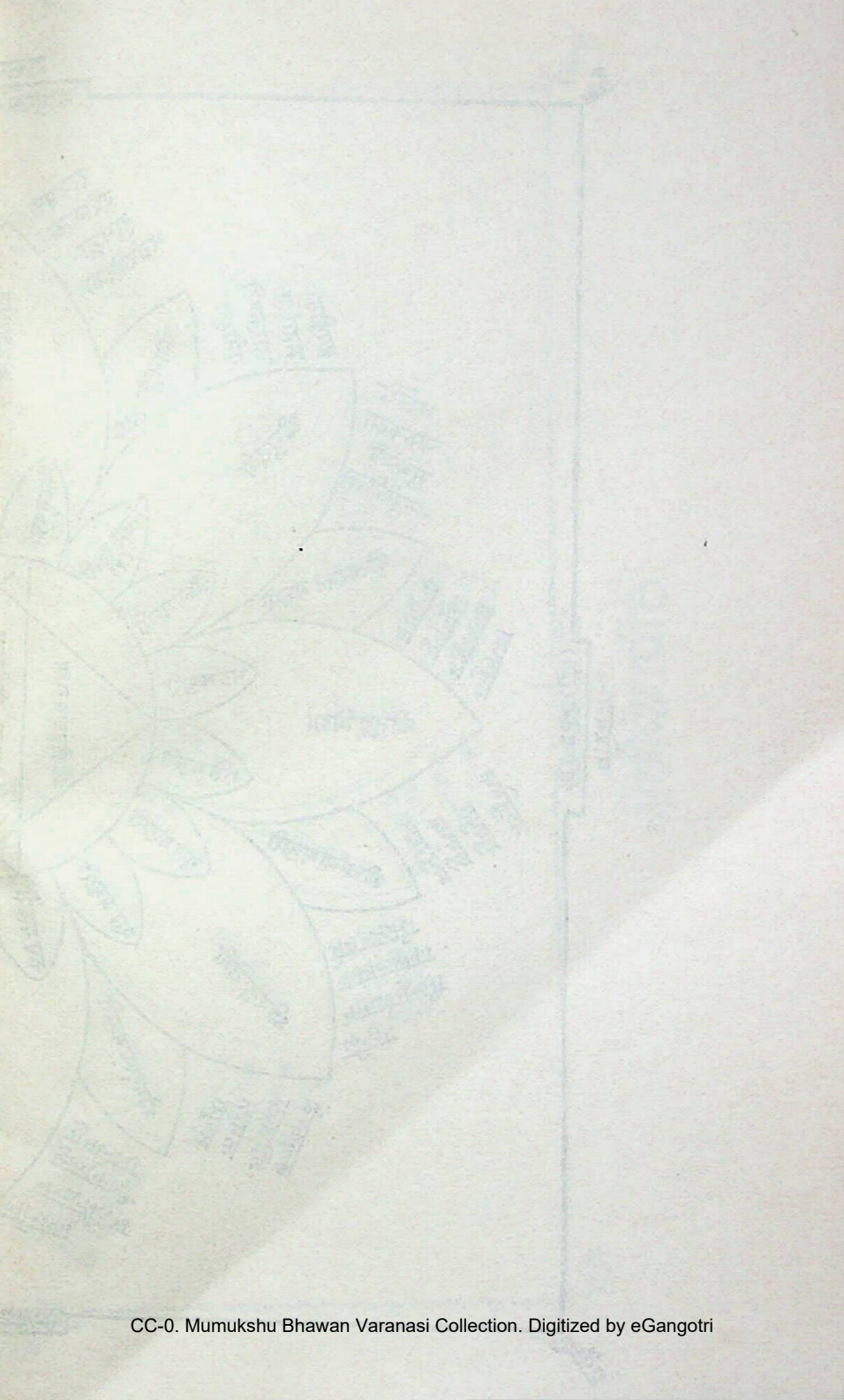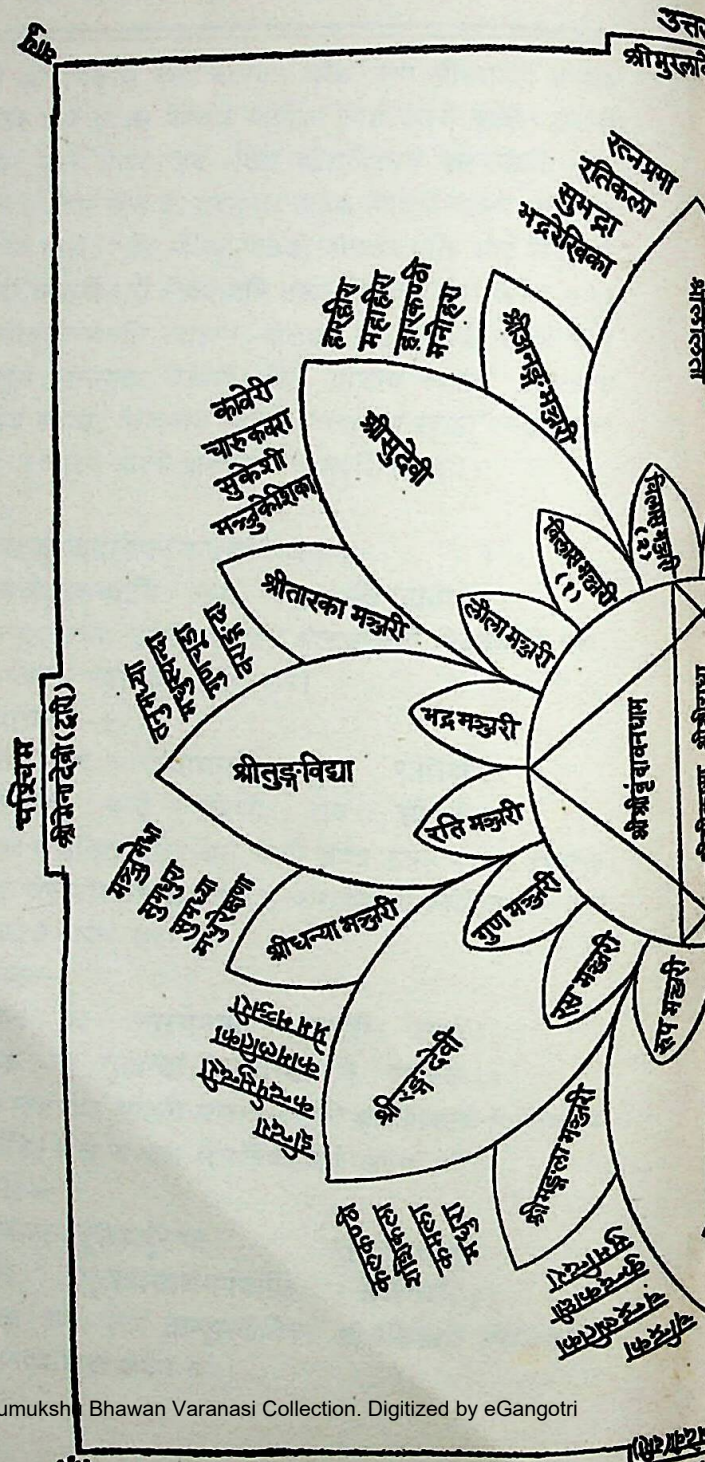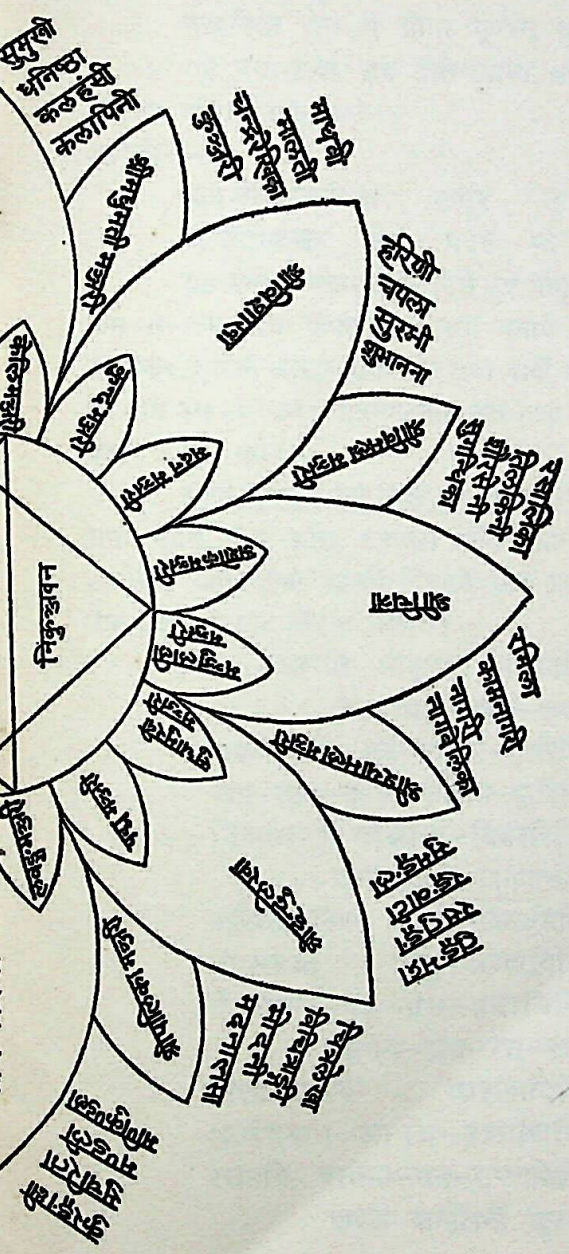
दक्षिणा—

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं दक्षिणा च तवाग्रतः।
स्थापिता तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्।।

यह मन्त्र तथा *'इदं दक्षिणाद्रव्यं श्रीराधिकायै समर्पयामि नमः'* बोलकर दक्षिणा अर्पण करे।

आरती—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदा भव।।

यह मन्त्र बोलकर कर्पूर मिले हुए गोघृतमें रूईकी बत्तियाँ भिगोकर कम–से–कम पाँच दीपककी आरती बनाये और तर्जनी तथा अँगूठेसे पकड़कर दाहिनी ओरसे बायीं ओर तथा बायीं ओरसे दाहिनी ओर तीन बार या सात बार ले जाय। गात्रमार्जनीय वस्त्र तथा पुष्प–गुच्छोंके द्वारा भी इसी प्रकार आरती करे।

इसके अनन्तर नीचे लिखी आरतीके पद सामूहिक गान करे। आरतीके समय मृदंग, ढोल, झाँझ, करताल आदि बजाने चाहिये। आरतीके पश्चात् उपस्थित व्यक्तियोंको आरती दिखाये और आरतीके जलके छीटें उनपर डाले। फिर प्रसाद बाँटना चाहिये।

आरति श्रीवृषभानुललीकी।
सत–चित–आनँद–कंद–कलीकी।। टेक।।

भयभंजिनि भव–सागर–तारिनि,
पाप–ताप–कलि–कल्मष–हारिनि,
दिब्यधाम–गोलोक–बिहारिनि,
जनपालिनि जगजननि भलीकी।। १।।

अखिल बिस्व आनंद–बिधायिनि,
मंगलमयी सुमंगलदायिनि,
नँदनंदन–पद–प्रेम–प्रदायिनि,
अमिय–राग–रस–रंग–रलीकी।। २।।

नित्यानंदमयी आह्लादिनि,
आनँदघन–आनंद–प्रसाधिनि,
रसमयि, रसमय–मन–उन्मादिनि,
सरस कमलिनी कृस्न–अलीकी।। ३।।

नित्य निकुंजेस्वरि रासेस्वरि,
परम प्रेमरूपा परमेस्वरि,
गोपिगनाश्रयि गोपिजनेस्वरि,
बिमल–बिचित्र–भाव–अवलीकी।। ४।।

नमस्कार—

तदनन्तर निम्नलिखित नमस्कारके श्लोकोंका पाठ करना चाहिये।—

तप्तकाञ्चनगौरांगि राधे वृन्दावनेश्वरि।
वृषभानुसुते देवि त्वां नमामि हरिप्रिये।।
नवीनां हेमगौरांगीं प्रवरेन्दीवराम्बराम्।
वृषभानुसुतां वन्दे वृन्दावनविलासिनीम्।।
तप्तकाञ्चनगौरांगी रंगिणीं प्रमदाकृतिम्।
वृषभानुसुतां वन्दे वृन्दावनविलासिनीम्।।
नवीनां हेमगौरांगी पूर्णानन्दवतां सतीम्।
वृषभानुसुतां देवी वन्दे राधां जगत्प्रसूम्।।
राधां रासेश्वरीं रम्यां गोविन्दमोहिनीं पराम्।
वृषभानुसुतां देवीं नमामि श्रीहरिप्रियाम्।।
महाभावस्वरूपा त्वं कृष्णप्रिया वरीयसी।
प्रेमभक्तिप्रदे देवि राधिके त्वां नमाम्यहम्।।
रासोत्सवविलासिनि नमस्ते परमेश्वरि।
कृष्णप्राणाधिके राधे परमानन्दविग्रहे।।

क्षमा–प्रार्थना—

तत्पश्चात् क्षमा–प्रार्थनाके निम्नलिखित श्लोक पढ़ने चाहिये—

नारायणि महामाये विष्णुमाये सनातनि।
प्राणाधिदेवि कृष्णस्य मामुद्धर भवार्णवात्।।
संसारसागरे घोरे भीतं मां शरणागतम्।
प्रपन्नं पतितं मातर्मामुद्धर हरिप्रिये।।
असंख्ययोनिभ्रमणादज्ञानान्धतमोऽन्वितम्।
ज्वलद्भिर्ज्ञानदीपैश्च मां सुवर्त्म प्रदर्शय।
सर्वेभ्योऽपि विनिर्मुक्तं कुरु राधे सुरेश्वरि।।
मां भक्तमनुरक्तं च कातरं यमताडनात्।
त्वत्पादपद्मयुगले पादपद्मालयार्चिते।।

देहि मह्यं परां भक्तिं कृष्णेन परिसेविते।
स्निग्धदूर्वांकुरैः शुक्लपुष्पैः कुसुमचन्दनैः।।
(नारदपाञ्चरात्र २। ४। १५–२०)

कातर–प्रार्थना—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं व्रजेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।
यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
आवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणानुकम्पया।।
त्राहि मां पापिनं घोरं धर्माचारविवर्जितम्।
नमस्कारेण देवेशि दुस्तराद्भवसागरात्।।

पुष्पाञ्जलि—

तत्पश्चात् पुष्पाञ्जलिके मन्त्र बोलते हुए, तथा मूलमन्त्र *'श्रीराधायै स्वाहा'* (देवीभागवतोक्त) या *'ॐ ह्रीं श्रीराधिकायै नमः'* का स्मरण करते हुए धेनुमुद्रा दिखाकर पुष्पाञ्जलि अर्पण करे। अन्तमें तीन बार या पाँच बार शंखध्वनि करके पूजा सम्पन्न करे।

पूजाके पश्चात् निम्नलिखित नमस्कारस्तोत्र तथा नामस्तोत्रका पाठ करना चाहिये।

नमस्कारस्तोत्र

नारायण उवाच

नमस्ते परमेशानि रासमण्डलवासिनि।
रासेश्वरि नमस्तेऽस्तु कृष्णप्राणाधिके प्रिये।।
नमस्त्रैलोक्यजननि प्रसीद करुणार्णवे।
ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्देवैर्वन्द्यमानपदाम्बुजे।।
नमः सरस्वतीरूपे नमः सावित्रि शंकरि।
गंगापद्मावतीरूपे षष्ठि मंगलचण्डिके।।
नमस्ते तुलसीरूपे नमो लक्ष्मीस्वरूपिणि।
नमो दुर्गे भगवति नमस्ते सर्वरूपिणि।।
मूलप्रकृतिरूपां त्वां भजामः करुणार्णवाम्।
संसारसागरादस्मानुद्धराम्ब दयां कुरु।।

इदं स्तोत्रं त्रिसंध्यं यः पठेद् राधां स्मरन्नरः।
न तस्य दुर्लभं किञ्चित् कदाचिच्च भविष्यति।।
देहान्ते च वसेन्नित्यं गोलोके रासमण्डले।
इदं रहस्यं परमं न चाख्येयं तु कस्यचित्।।

(देवीभागवत ९। ५०। ४६–५२)

भगवान् नारायण कहते हैं—'भगवती परमेशानि! तुम रासमण्डलमें विराजमान रहती हो। तुम्हें नमस्कार है। रासेश्वरि! भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हें प्राणोंसे भी अधिक प्रिय मानते हैं। तुम्हें नमस्कार है। करुणार्णवे! तुम त्रिलोककी जननी हो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम मुझपर प्रसन्न होनेकी कृपा करो। ब्रह्मा–विष्णु आदि समस्त देवता तुम्हारे चरणकमलोंकी उपासना करते हैं। जगदम्ब! तुम सरस्वती, सावित्री, शंकरी, गंगा, पद्मावनी, षष्ठी और मंगलचण्डिका—इन रूपोंमें विराजमान हो; तुम्हें नमस्कार है। तुलसीरूपे! तुम्हें नमस्कार है। लक्ष्मीस्वरूपिणि! तुम्हें नमस्कार है। भगवती दुर्गे! तुम्हें नमस्कार है। सर्वरूपिणि! तुम्हें नमस्कार है। जननि! तुम मूलप्रकृतिस्वरूपा एवं करुणाकी सागर हो। हम तुम्हारी उपासना करते हैं; अतः तुम इस संसार–सागरसे उद्धार करनेकी कृपा करो।'

'जो पुरुष त्रिकाल संध्याके समय भगवती श्रीराधाका स्मरण करते हुए उनके इस स्तोत्रका पाठ करता है, उसके लिये कभी कोई भी वस्तु किञ्चित्मात्र भी दुर्लभ नहीं हो सकती। आयु समाप्त होनेपर शरीरको त्यागकर वह बड़भागी पुरुष गोलोकमें जाकर रासमण्डलमें नित्य स्थान पाता है। यह परम रहस्य जिस–किसीके सामने नहीं कहना चाहिये।

श्रीराधाके सैंतीस पवित्र नाम

राधा रासेश्वरी रम्या रामा च परमात्मनः।
रासोद्भवा कृष्णकान्ता कृष्णवक्षः स्थलस्थिता।।
कृष्णप्राणाधिदेवी च महाविष्णोः प्रसूरपि।
सर्वाद्या विष्णुमाया च सत्या नित्या सनातनी।।
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिप्ता निर्गुणा परा।
वृन्दा वृन्दावनेशा च विरजातटवासिनी।।
गोलोकवासिनी गोपी गोपीशा गोपमातृका।
सानन्दा परमानन्दा नन्दनन्दनकामिनी।।

वृषभानुसुता शान्ता कान्ता पूर्णतमा च सा।
काम्या कलावती–कन्या तीर्थपूता सती शुभा।।
सप्तत्रिंशच्च नामानि वेदोक्तानि शुभानि च।
सारभूतानि पुण्यानि सर्वनामसु नारद।।
यः पठेत् संयतः शुद्धो विष्णुभक्तो जितेन्द्रियः।
इहैव निश्चलां लक्ष्मीं लब्ध्वा याति हरेः पदम्।।
हरिभक्तिं हरेर्दास्यं लभते नात्र संशयः।।

(नारदपाञ्चरात्र २। ४। ४८–५५)

राधा, रासेश्वरी, रम्या, परमात्मनोरामा, रासोद्भवा, कृष्णकान्ता, कृष्णवक्षःस्थलस्थिता, कृष्णप्राणाधिदेवी, महाविष्णोः प्रसूः, सर्वाद्या, विष्णुमाया, सत्या, नित्या, सनातनी, परमा, ब्रह्मस्वरूपा, निर्लिप्ता, निर्गुणा, परा, वृन्दा, वृन्दावनेशा, विरजातटवासिनी, गोलोकवासिनी, गोपी, गोपीश्वरी, गोपमातृका, सानन्दा, परमानन्दा, नन्दनन्दनकामिनी, वृषभानुसुता, शान्ता, कान्ता, पूर्णतमा, काम्या, कलावतीकन्या, तीर्थपूता, सती, और शुभा——ये सैंतीस अति पवित्र नाम हैं। नारद ! सारे नामोंकी अपेक्षा अत्यन्त पवित्र और सब नामोंमें सारभूत ये नाम हैं। जो विष्णुभक्त जितेन्द्रिय पुरुष संयतचित्त होकर इनका पाठ करता है, वह इस लोकमें अचला लक्ष्मीको प्राप्त करके अन्तमें श्रीहरिके पदको प्राप्त होता है। उसे हरिभक्ति तथा हरिका दास्यभाव मिलता है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।

योगपीठ–पूजा

श्रीराधा–माधवके पूजनके साथ ही मण्डलस्थ सखियोंके पूजनकी बात आती है। उस मण्डलको 'योगपीठ' भी कहते हैं। योगपीठ–यन्त्रका चित्र इसमें दिया जाता है। नीचे उनका वर्णन है। उसमें मध्य–कर्णिकामें श्रीराधामाधवकी पूजा करनी है। शेष ६६ सखियोंकी पूजा यथास्थान प्रत्येक नामके आदिमें प्रणव और अन्तमें नामको चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदानकारक) में लाकर 'नमः' जोड़कर उस–उस मन्त्रके द्वारा योगपीठ (कमलदल) के पश्चिमसे ललिता आदि सखियोंकी पूजा करे।

मन्त्र यों बनेगा——ॐ ललितायै नमः।

इसी प्रकार सभी नामोंका मन्त्र बना लेना चाहिये।

योगपीठ–कमलदल–यन्त्रमें ६६ नाम हैं। इनके अतिरिक्त दस

नाम और शेष हैं, जिनका उल्लेख नीचे किया जाता है।। इनकी भी पूजा करनी चाहिये।

(१) श्रीकुन्दवल्ल्यै नमः। (२) श्रीधनिष्ठायै नमः। (३) श्रीश्रुतिपूर्वाभ्यो गोपीभ्यो नमः। (४) श्रीऋषिपूर्वाभ्यो गोपीभ्यो नमः। (५) श्रीदेवीपूर्वाभ्यो गोपीभ्यो नमः। (६) श्रीबल्लवबालाभ्यो नमः। (७) श्रीयूथाधिपाभ्यो गोपीभ्यो नमः। (८) श्रीवृन्दादेव्यै नमः। (९) श्रीभगवत्यै पौर्णमास्यै नमः। (१०) श्रीचन्द्रावल्यै नमः।

योगपीठ–यन्त्र एक सहस्रदल कमल है। उसके केन्द्र––मध्यमें श्रीराधामाधव–युगल विराजित है। उस सहस्रदल कमलमें उत्तरकी ओर श्रीललिताजी, ईशानमें श्रीविशाखाजी, पूर्वमें श्रीचित्रा, अग्निकोणमें श्रीइन्दुरेखा, दक्षिणमें श्रीचम्पकलता, नैर्ऋत्यमें श्रीरंगदेवी, पश्चिममें श्रीतुंगविद्या और वायुकोणमें श्रीसुदेवीजी सुशोभित हैं।

ये अष्ट सखियाँ प्रधान अष्टदलोंमें हैं। इन्हींके अनुगत प्रधान अष्ट मञ्जरियाँ हैं। वे अष्ट उपदलोंमें स्थित हैं। उनके क्रमशः नाम है––श्रीअनंगमञ्जरी, श्रीमधुमतीमञ्जरी, श्रीविमलामञ्जरी, श्रीश्यामलामञ्जरी, श्रीपालिकामञ्जरी, श्रीमंगलामञ्जरी, श्रीधन्यामञ्जरी और श्रीतारकामञ्जरी।

इन प्रधान अष्ट मञ्जरियोंमेंसे प्रत्येकके अनुगत और किञ्जल्कपार्श्वमें अवस्थित दो–दोके हिसाबसे सोलह (१६) प्रियनर्म–सखियाँ हैं। उनके नाम ये हैं––

१–२ लवंगमञ्जरी और रूपमञ्जरी
३–४ रसमञ्जरी और गुणमञ्जरी
५–६ रतिमञ्जरी और भद्रमञ्जरी
७–८ लीलामञ्जरी और विलासमञ्जरी (१)
९–१० विलासमञ्जरी (२) और केलिमञ्जरी
११–१२ कुन्दमञ्जरी और मदनमञ्जरी
१३–१४ अशोकमञ्जरी और मञ्जुलालीमञ्जरी
१५–१६ सुधामुखीमञ्जरी और पद्ममञ्जरी

प्रधान अष्टसखी श्रीललिता आदिमेंसे प्रत्येकके पृथक्–पृथक् यूथमें आठ–आठ सखियाँ हैं, जो सब मिलाकर ६४ होती हैं। उनके नाम ये हैं––

श्रीललिताके यूथमें––रत्नप्रभा, रतिकला, सुभद्रा, भद्ररेखिका, सुमुखी, धनिष्ठा, कलहंसी और कलापिनी।

श्रीविशाखाके यूथमें—–माधवी, मालती, चन्द्ररेखिका, कुञ्जरी, हरिणी, चपला, सुरभी और शुभानना।

श्रीचित्राके यूथमें—–रसालिका, तिलकिनी, शौरसेनी, सुगन्धिका, रमिला, कामनागरी, नागरी और नागवेलिका।

श्रीइन्दुरेखाके यूथमें—तुंगभद्रा, रसतुंगा, रंगवटी, सुमंगला, चित्रलेखा, विचित्रांगी, मोदनी और मदनालसा।

श्रीचम्पकलताके यूथमें—–कुरंगांक्षी, सुचरिता, मण्डली, मणिकुण्डला, चन्द्रिका, चन्द्रलतिका, कुन्दकाक्षी और सुमन्दिरा।

श्रीरंगदेवीके यूथमें—–कलकण्ठी, शशिकला, कमला, मधुरा, इन्दिरा, कन्दर्पसुन्दरी, कामलतिका और प्रेममञ्जरी।

श्रीतुंगविद्याके यूथमें—–मञ्जुमेधा, सुमधुरा, सुमध्या, मधुरेक्षणा, तनुमध्या, मधुस्यन्दा, गुणचूड़ा और वरांगदा।

श्रीसुदेवीके यूथमें—–कावेरी, चारुकवरा, सुकेशी, मञ्जुकेशिका, हारहीरा, महाहीरा, हारकण्ठी और मनोहरा।

इन सभीका पूजन उपर्युक्त प्रकारसे करना चाहिये।

श्रीजगन्मंगल–राधाकवच तथा उसकी महिमा

अन्तमें यहाँ श्रीराधाजीका 'जगन्मंगल कवच' दिया जा रहा है। जिसका नियमपूर्वक श्रद्धा–भक्तिसमन्वित हृदयसे पाठ करनेपर लोक–परलोकके सभी विघ्नोंका नाश और सभी प्रकारके वैध सुखोंकी प्राप्ति होती है। साधनमें प्रगति तथा भगवान् श्रीराधामाधवमें प्रेम, जो केवल उनकी कृपासे ही तीव्र तथा अनन्य इच्छा होनेपर सुलभ हो सकता है, प्राप्त होता है—–इस कवचका आश्रय लेनेपर अभीष्ट–सिद्धिमें बहुत कुछ सहायता तथा सुविधा मिलती है।

श्रीजगन्मंगलराधाकवचम्

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीजगन्मंगलकवचस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः स्वयं रासेश्वरी देवता श्रीकृष्णभक्तिसम्प्राप्तौ विनियोगः।

कवचम्

ॐ राधेति चतुर्थ्यन्तं वह्निजायान्तमेव च।
कृष्णेनोपासितो मन्त्रः कल्पवृक्षः शिरोऽवतु।।
ॐ ह्रीं श्रीं राधिका ङेऽन्तं वह्निजायान्तमेव च।
कपालं नेत्रयुग्मं च श्रोत्रयुग्मं सदावतु।।
ॐ रां ह्रीं श्रीं राधिकेतिङेऽन्तं वह्निजायान्तमेव च।
मस्तकं केशसंघांश्च मन्त्रराजः सदावतु।।
ॐ रां राधेति चतुर्थ्यन्तं वह्निजायान्तमेव च ।
सर्वसिद्धिप्रदः पातु कपोलं नासिकां मुखम्।।
क्लीं श्रीं कृष्णप्रिया ङेऽन्तं कण्ठं पातु नमोऽन्तकम्।
ॐ रां रासेश्वरी ङेऽन्तंस्कन्धं पातु नमोऽन्तकम्।।
ॐ रां रासविलासिन्यै स्वाहा पृष्ठं सदावतु।
वृन्दावनविलासिन्यै स्वाहा वक्षः सदावतु।।
तुलसीवनवासिन्यै स्वाहा पातु नितम्बकम्।
कृष्णप्राणाधिका ङेऽन्तं स्वाहान्तं प्रणवादिकम्।।
पादयुग्मं च सर्वांगं संततं पातु सर्वतः।
राधा रक्षतु प्राच्यां च वह्नौ कृष्णप्रियावतु।।
दक्षे रासेश्वरी पातु गोपीशा नैर्ऋतेऽवतु।
पश्चिमे निर्गुणा पातु वायव्ये कृष्णपूजिता।।
उत्तरे संततं पातु मूलप्रकृतिरीश्वरी।
सर्वेश्वरी सदैशान्यां पातु मां सर्वपूजिता।।
जले स्थले चान्तरिक्षे स्वप्ने जागरणे तथा।
महाविष्णोश्च जननी सर्वतः पातु संततम्।।
कवचं कथितं दुर्गे श्रीजगन्मंगलं परम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गूढाद् गूढतरं परम्।।
तव स्नेहान्मयाऽऽख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित्।
गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकारचन्दनैः।।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ धृत्वा विष्णुसमो भवेत्।
शतलक्षजपेनैव सिद्धं च कवचं भवेत्।।
यदि स्यात् सिद्धकवचो न दग्धो वह्निना भवेत्।
एतस्मात् कवचाद् दुर्गे राजा दुर्योधनः पुरा।

विशारदो जलस्तम्भे वह्निस्तम्भे च निश्चितम्।
मया सनत्कुमाराय पुरा दत्तं च पुष्करे।।
सूर्यपर्वणि मेरौ च स सांदीपनये ददौ।
बलाय तेन दंत्त च ददौ दुर्योधनाय सः।।
कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।

(ब्रह्म० प्रकृतिखण्ड ५६। ३२–४६)

श्रीजगन्मंगल–राधा कवच

विनियोग

"इस जगन्मंगल राधाकवचके प्रजापति ऋषि हैं, गायत्री छन्द है, स्वयं रासेश्वरी देवता है और श्रीकृष्णभक्तिकी प्राप्तिके लिये इसका विनियोग बताया गया है।

(यह मन्त्र बोलकर विनियोगका जल छोड़ दे। तदनन्तर कवचका पाठ करे।)

कवच

'ॐ राधायै स्वाहा' यह मन्त्र कल्पवृक्षके समान मनोवाञ्छित फल देनेवाला है और श्रीकृष्णने इसकी उपासना की है। यह मेरे मस्तककी रक्षा करे। 'ॐ ह्रीं श्रीं राधिकायै स्वाहा' यह मन्त्र मेरे कपालकी तथा दोनों नेत्रों और कानोंकी सदा रक्षा करे। 'ॐ रां ह्रीं श्रीं राधिकायै स्वाहा' यह मन्त्रराज सदा मेरे मस्तक और केशसमूहोंकी रक्षा करे। 'ॐ रां राधायै स्वाहा' यह सर्वसिद्धिदायक मन्त्र मेरे कपोल, नासिका और मुखकी रक्षा करे। 'ॐ क्लीं श्रीं कृष्णप्रियायै नमः' यह मन्त्र मेरे कण्ठकी रक्षा करे। 'ॐ रां रासेश्वर्यै नमः' यह मन्त्र मेरे कंधेकी रक्षा करे। 'ॐ रां रासविलासिन्यै स्वाहा' यह मन्त्र मेरे पृष्ठभागकी सदा रक्षा करे। 'ॐ वृन्दावनविलासिन्यै स्वाहा' यह मन्त्र वक्षःस्थलकी सदा रक्षा करे। 'ॐ तुलसीवनवासिन्यै स्वाहा' यह मन्त्र नितम्बकी रक्षा करे। 'ॐ कृष्णप्राणाधिकायै स्वाहा' यह मन्त्र दोनों चरणों तथा सम्पूर्ण अंगोंकी सदा सब ओरसे रक्षा करे। 'राधा' पूर्व दिशामें मेरी रक्षा करें। 'कृष्ण–प्रिया' अग्निकोणमें मेरा पालन करें। 'रासेश्वरी' दक्षिण दिशामें मेरी रक्षाका भार सँभालें। 'गोपीश्वरी' नैर्ऋत्यकोणमें मेरा संरक्षण करें। 'निर्गुणा' पश्चिम तथा 'कृष्णपूजिता' वायव्यकोणमें मेरा पालन करें। 'मूलप्रकृति

ईश्वरी' उत्तर दिशामें निरन्तर मेरे संरक्षणमें लगी रहें। 'सर्वपूजिता सर्वेश्वरी' सदा ईशानकोणमें मेरी रक्षा करें। 'महाविष्णु–जननी' जल, स्थल, आकाश, स्वप्न और जागरणमें सदा सब ओरसे मेरा संरक्षण करें।

"दुर्गे ! यह परम उत्तम श्रीजगन्मंगलकवच मैंने तुमसे कहा है। यह गूढ़से भी परम गूढ़तर तत्त्व है। इसका उपदेश हर एकको नहीं देना चाहिये। मैंने तुम्हारे स्नेहवश इसका वर्णन किया है। किसी अनधिकारीके सामने इसका प्रवचन नहीं करना चाहिये। जो वस्त्र, आभूषण और चन्दनसे गुरुकी विधिवत् पूजा करके इस कवचको कण्ठ या दाहिनी बाँहमें धारण करता है, वह भगवान् विष्णुके समान तेजस्वी हो जाता है। सौ लाख जप करनेपर यह कवच सिद्ध हो जाता है। यदि किसीको यह सिद्ध हो जाय तो वह आगसे जलता नहीं है। दुर्गे ! पूर्वकालमें इस कवचको धारण करनेसे ही राजा दुर्योध ानने जल और अग्निका स्तम्भन करनेमें निश्चितरूपसे दक्षता प्राप्त की थी। मैंने पहले पुष्करतीर्थमें सूर्यग्रहणके अवसरपर सनत्कुमारको इस कवचका उपदेश दिया था। सनत्कुमारने मेरुपर्वतपर सांदीपनिको यह कवच प्रदान किया। सांदीपनिने बलरामजीको और बलरामजीने दुर्योधनको इसका उपदेश दिया इस कवचके प्रसादसे मनुष्य जीवन्मुक्त हो सकता है।"

उपर्युक्त वर्णनके अनुसार श्रीराधा–जन्माष्टमी–व्रत–महोत्सवका माहात्म्य तथा विधान जानकर श्रद्धा–प्रेम और सम्मानके सहित महोत्सव मनाना तथा व्रतका सेवन करना चाहिये।

श्री राधा ! कृष्णप्रिया ! सकल सुमंगल मूल।
सतत नित्य देती रहो पावन निज–पद–धूल।।
मिटें जगत्के द्वन्द्व सब, हों विनष्ट सब शूल।
इह–पर जीवन रहे नित तव सेवा अनुकूल।।
देवि ! तुम्हारी कृपासे करें कृपा श्रीश्याम।
दोनोंके पदकमलमें उपजे भक्ति ललाम।।
महाभाव, रसराज तुम दोनों करुणाधाम।
निज जन कर, देते रहो निर्मल रस अविराम।।

बोलो श्रीराधारानी और उनके परमाराध्य भगवान् श्यामसुन्दरकी जय !

परिशिष्ट

श्रीराधामाधवकी पूजा, मण्डल–स्थित उनकी सखियोंके स्थान, ध्यान तथा पूजन–नमस्कार

(पद्मपुराण, उत्तरखण्ड अ० १६२–१६३ के अनुसार)

(मण्डलका यह विधान बड़ा ही सुन्दर तथा कल्याणकारी है। कोई चाहे तो योगपीठ–यन्त्रके स्थानपर इस मण्डलके अनुसार भी पूजा कर सकते हैं। स्थान तथा नामोंकी भिन्नता साधकोंकी अपनी–अपनी अनुभूतिके अनुसार हुआ करती है। इसमें संदेह नहीं करना चाहिये।)

ललिता पश्चिमे पूज्या पीतवर्णदलेऽपराम्।
चन्द्रावतीं शुक्लदले तद्वामे पूजयेत् सुधीः।।
वायव्ये श्यामलां देवीं कृष्णवर्णदलेऽर्च्चयेत्।
तद्वामे चित्ररेखाख्यां शुक्लवर्णदले ततः।।
उत्तरे श्रीमती त्वर्च्या रक्तवर्णदले तथा।
तद्वामपार्श्वे चन्द्राख्यां नीलवर्णदलेऽर्च्चयेत्।।
रक्तवर्णदलेऽप्यर्च्या ईशाने श्रीहरिप्रिया।
तस्या वामे शुक्लदले पूज्या मदनसुन्दरी।।
पीतवर्णदले पूर्वे विशाखामर्च्चयेत्ततः।
प्रियां तस्या वामपार्श्वे शुक्लवर्णदलेऽर्च्चयेत्।।
अग्निकोणे श्यामवर्णदले शैब्यां समर्च्चयेत्।
तद्वामे श्रीमधुमतीं शुक्लवर्णदलेऽर्च्चयेत्।।
पूजयेद्दक्षिणे पद्मां रक्तवर्णदले तथा।
शशिरेखां च तद्वामे नीलवर्णदलेऽर्च्चयेत्।।
पूजयेन्नैर्ऋते भद्रां रक्तवर्णदले ततः।
रसप्रियां च तद्वामे शुक्लवर्णदलेऽर्च्चयेत्।।

श्रीराधाप्रियसंगिनीं विधुमुखीं कृष्णप्रियां प्रेयसीं
हेमाभां परिवादिनीं सुमधुरध्वानां सुवेशाम्बराम्।
सद्रत्नाभरणैर्मनोज्ञसुतनुं नित्यां जगन्मोहिनीं
वन्दे श्रीललितां कुरंगनयनीं पीताम्बरेणावृताम्।।

श्यामां श्यामपरायणां वरतनुं चामीकरांगच्छटां
मञ्जीरैर्मधुरध्वनिं परिलसच्च्वन्द्राननां सुस्वराम्।
सद्रत्नाभरणां सरोजनयनीं शुक्लांशुकेनावृतां
ध्यायेच्छ्रीललितासखीं सुचिबुकां चन्द्रावतीमुत्तमाम्।।
कान्त्या काञ्चनसंनिभां सुललितां कृष्णाम्बरं बिभ्रतीं
नानाभूषणमञ्जुलां च सुदतीं मार्दंगिकीं सुन्दरीम्।
श्रीवृन्दाविपिनेश्वरीप्रियसखीं भव्यां शशांकाननां
वेणीचारुसुमल्लिकास्रजममूं नित्यं भजे श्यामलाम्।।
श्रीकृष्णप्रियवल्लभां शशिमुखीं सच्छब्दडम्फान्वितां
शुद्धस्वर्णशरीरकान्तिमतुलां शुक्लाम्बरेणावृताम्।
स्वर्णाद्याभरणां सदा पुलकिनीं श्रीकृष्णभावेन वै
गायन्तीं मधुरस्वरैरविरतं श्रीचित्रलेखां भजे।।
कनकनिभशरीरां बिभ्रतीं रक्तवस्त्रं
ललितनलिननेत्रां चारुभूषांगशोभाम्।
सुमधुरपिकवाक्यां चन्द्रवक्त्रां सुवेशां
मधुरिपुनिजदासीं श्रीमतीं तां हि वन्दे।।
वृन्दावनेशनिजसेवनसौख्यदासीं
रम्यां सुनीलवसनां सुरवावयन्त्राम्।
नानाविभूषिततनुं स्फुरदम्बुजाक्षीं
चन्द्रां भजे सकलरागमनोज्ञगानाम्।।
सुवर्णवर्णशुकधारिणीं
तामुपांगयन्त्रां मणिभूषणांगीम्।
हरिप्रियां मञ्जुलपत्रनेत्रां
भजेऽहमीड्यां कनकांगशोभाम्।।
रवावकलवादिनीं सकलरागसंगायिनीं
सुचारुमणिकुण्डलां शरदि पूर्णचन्द्राननाम्।
सुरत्नवरभूषणां रुचिरशुभ्रपट्टाम्बरां
भजे मदनसुन्दरीं कनकवर्णदेहां शुभाम्।।
सुतानज्ञां गीते भ्रमरकलकण्ठीं सुचतुरां
जगद्वन्द्यां वेल्लन्नलिननयनामिन्दुवदनाम्।

विशाखां गौरांगी कलितमुरलीं पीतवसनां
भजे श्यामां सेव्यां सकलगुणपूर्णां सुखमयीम्।।
सुचामीकराभूषणाढ्यां सुवेशां
सुसंगीतविद्यासुधीरां वरेण्याम्।
सुवंशीसुगानां सुहेमांगशोभां
भजे श्रीप्रियां शुक्लवस्त्रां मनोज्ञाम्।।
गान्धर्वानिजदासिकां सुरवदं यन्त्रं सदा बिभ्रतीं
मञ्जुस्वर्णविभूषितां वरतनुं पाथोजनेत्रां वराम्।
ध्यायेत् कृष्णपदारविन्दमधुपीं कृष्णाम्बरेणावृतां
संगीते मधुरस्वरामविरतं शैब्यां मनोहारिणीम्।।
रुचिरमधुमतीं तां तप्तचामीकराभां
पिककलरवकण्ठीं शक्लवस्त्रं दधानाम्।
तिलकुसुमसुनासां चारुहेमांगभूषां
युगलचरणसेवातत्परामाभजेऽहम्।।
रत्नालंकारदेहां जितकुसुमरुचिमंगलावण्यरूपै—
र्भव्यां संगीतविद्यासुनिपुणरसिकां तालमानातिविज्ञाम्।
सारंगीयन्त्रगानां कनकनिभतनुं सर्वदा कृष्णसेवीं
वन्दे पद्मां सुकेशां शशधरवदनां बिभ्रतीं रंगवस्त्रम्।
शशिरेखां मृदंगं च वादयन्तीं मुहुर्मुहुः।
रसालापस्वरूपां च रसप्रेमैकसंयुताम्।।
भव्यां श्रीशशिरेखिकां सुखमयीं यन्त्रादिगानां वरां
वन्देऽहं मधुरस्वरां परमिकां लावण्यसारान्विताम्।
नानायन्त्रविशारदां वरतनुं पट्टाम्बरेणावृतां
फुल्लेन्दीवरलोचनामविरतं ध्याये जगन्मोहिनीम्।।
श्रीयन्त्रं स्वरमण्डलं कलरवं गाने सदा बिभ्रतीं
श्रीभद्रां मधुरस्वरां सुललितां सद्रक्तवस्त्रावृताम्।
राजत्स्वर्णरुचिं विभूषणवरैरंगैः सदा शोभितां
ध्याये श्रीयुगसेविकां परमिकां ह्लादैकमग्नां सदा।।
राधाकृष्णपदारविन्दमधुपीं सद्भृंगतुल्याथिनीं
नानाभूषणभूषितांगरुचिरां सद्रक्तवस्त्रां शुभाम्।

ध्याये संततकृष्णभावललितां केयूरहेमांगदां
स्वर्णांगीं च रसप्रियां सुखमयीं सर्वांगशोभान्विताम्।।
मधुस्वरां कोकिलभृंगगानां सुतुम्बुरीयन्त्रविधारिणीं च।
वनप्रियां शुक्लसुचीनवस्त्रां भजे हरिद्रांगसुमञ्जुशोभाम्।।
एवं ध्यात्वा पूजयित्वा ललिताद्या यथाक्रमात्।
पाद्यादिभिश्चोपचारैर्विधिवद्भक्तितत्परः ।।
संगिन्यो ललितादीनां दलात्पश्चिमतो मुने।
प्रणवादिनमोऽन्तेन सम्प्रदानपदेन वै
तत्तन्नाम्ना तु मनुना पुष्पगन्धादिभिर्मुने।

श्रीसदाशिव उवाच

प्रत्येकेऽष्टौ पूजयेद्वै क्रमतस्तु दले दले।
शृणु नाम्ना हि कथ्यन्ते ताश्चाष्टाविंशाधिकं शतम्।।
इन्दुमुखी रसज्ञा च शुभदा सुमुखी तथा।
बल्लवी चन्द्रिका चारुचतुरा च सुचञ्चला।।
मधुरा हस्तकमला तथा मधुरभाविनी।
विलासिनी रसवती तथा खञ्जनलोचना।।
सुखदा चम्पकलिका रसदा रसमञ्जरी।
सदा सुमंञ्जरी शीला चन्द्रा चन्द्रप्रभावती।।
वासन्ती मालती जाती चन्द्रकान्तिः सुकुन्तला।
रम्भा भ्रमरगम्भीरा सुशीला च सुवेशिनी।।
आमलकी सुधाकण्ठी श्रिता च श्रीरतिप्रिया।
शुकप्रिया मधुकरी सुवेशा चामृतोद्भवा।।
मुरलीवल्लभा वृन्दा पारिजातप्रिया शुभा।
पञ्चस्वरा रत्नमाला मदिरा रासबल्लवी।।
मातंगगमनी तारावती कुण्डलधारिणी।
केशरी मित्रविन्दा च लक्षणाच्युतमालिका।।
मायावती कौशिकी च कोमलांगी सुचन्दनी।
पीयूषभाषिणी सत्यवती च कुञ्जवासिनी।।
कपोतमालिका लोपामुद्रा च किंशुकप्रिया।
दलावती कुङ्कुमा च कमला च मदालसा।।

तिलोत्तमा च सावित्री बहुला प्रियवादिनी।
मुक्तावली चित्ररेखा सुमित्रा लोलकुण्डला।।
अरुन्धती चित्रवती श्रीरक्ता पद्मगन्धिनी।
मेनका कलिका रंगकेतकी काममूर्च्छनी।।
कुमुदप्रिया च तानज्ञा तथा नृत्यविलासिनी।
हीरावती हारकण्ठी सिंहमध्या सुलोचना।।
नन्दव्याऽऽनन्दकलिका सुनन्दाऽऽनन्ददायिनी।
कुरंगाक्षी च सुश्रोणी केलिलोला प्रियंवदा।।
श्यामाराध्या श्यामसेव्या कस्तूरी मानभञ्जिनी।
विचित्रवसना रत्नमञ्जीरा मञ्जुकिंकिणी।।
पिकस्वरा भृंगगाना तथा रासविहारिणी।
श्रीकृष्णदक्षिणे पूज्या यत्नाच्चन्द्रावली ततः।
ध्यानपाद्यादिभिः सम्यक्प्रकारेण च पूजकैः।।

हेमाभां मधुरस्वरां विधुमुखीं गान्धर्वविद्यारतां
नानाभूषणभूषितांगमधुरां जातीसुमल्लीस्रजम्।
वीणायन्त्रसुवादिनीं वरतनुं चित्राम्बरं बिभ्रतीं
ध्याये कृष्णपरायणां सुचिबुकां चन्द्रावलीं मञ्जुलाम्।।

श्रीराधिकार्पणमस्तु।

पश्चिम दिशामें पीले वर्णके कमल—दलमें ललितादेवीकी पूजा करे। उसके वामभागमें उज्ज्वल वर्णके कमल—दलमें बुद्धिमान् पुरुष दूसरी चन्द्रावतीकी पूजा करे। वायव्यकोणमें काले वर्णके कमल—दलमें श्यामलादेवीकी अर्चना करे। उनके वामभागमें शुक्लवर्णके कमल—दलमें चित्ररेखा नामकी सखीकी पूजा करे। उत्तर दिशामें रक्तवर्णके कमल—दलमें श्रीमतीकी अर्चना करे। उनके वामपार्श्वमें नीले रंगके कमल—दलमें चन्द्रा नामकी सखीकी पूजा करे। ईशानकोणमें रक्तवर्ण कमल—दलमें श्रीहरिप्रियाकी अर्चना करे। उनके वामभागमें शुक्ल कमल—दलमें मदनसुन्दरीकी पूजा करे। तत्पश्चात् पूर्व दिशामें पीले वर्णके कमल—दलमें विशाखाकी पूजा करे। उनके वामभागमें शुक्लवर्णके कमल—दलमें प्रिया सखीकी पूजा करे। अग्निकोणमें काले वर्णके दलमें शैब्याकी अर्चना करे। उनके वामभागमें शुक्लवर्ण कमल—दलमें श्रीमधुमतीकी पूजा करे। दक्षिण दिशामें रक्तवर्णके दलमें पद्मा सखीकी पूजा करे। उनके वामभागमें नीलवर्णके दलमें शशिरेखाकी अर्चा करे।

नैर्ऋत्यकोणमें रक्तवर्णके कमल–दलमें भद्रा सखीकी पूजा करे। उनके वामभागमें शुक्लवर्णके दलमें रसप्रियाकी अर्चना करे।

श्रीराधाजीकी प्रिय सखी, चन्द्रवदनी, कृष्णप्रिया, प्रियतमा, स्वर्णकी कान्तिसे युक्त, सुमधुर ध्वनियुक्त वीणा बजानेवाली, सुन्दर वेष–वस्त्रवाली, रमणीय रत्नों और आभूषणोंके द्वारा मनोहर सुन्दर शरीरवाली, नित्य विराजमान् रहकर जगत्को मोहनेवाली, पीत परिधान धारण करनेवाली, मृगनयनी श्रीललितादेवीकी मैं वन्दना करता हूँ। श्यामवर्णा, श्यामसुन्दरमें तल्लीन रहनेवाली, सुन्दर शरीरवाली, स्वर्णके समान दीप्त अंगोंवाली, नूपुरोंकी मधुर–ध्वनिसे विलसित, सुन्दर स्वरवाली, चन्द्रवदनी, रमणीय रत्नों और आभूषणोंसे सज्जित, कमलनयनी, श्वेतवस्त्र धारण करनेवाली, सुन्दर चिबुकवाली तथा श्रीललिताजीकी प्रिय सखी, श्रेष्ठ चन्द्रावती सखीका ध्यान करता हूँ। जो कान्तिमें सोनेके समान तथा अत्यन्त मनोहर हैं; कृष्ण वसन धारण करती हैं, नाना प्रकारके आभूषणोंसे सुसज्जित एवं मनोहर हैं, सुन्दर दाँतवाली हैं, मृदंग बजानेमें कुशल और सुन्दरी हैं, जिनकी वेणी सुन्दर मल्लिकाकी मालासे सुशोभित है, मंगलमयी, चन्द्रवदनी, श्रीवृन्दावनेश्वरी श्रीराधाकी प्रियसखी श्यामलाको मैं नित्य भजता हूँ।

चन्द्रवदनी, सुन्दर शब्द करनेवाले डफसे युक्त, शुद्ध स्वर्णकी–सी शरीर–कान्तिवाली, उपमा–रहित, शुक्ल वस्त्र धारण करनेवाली, सोने आदिके आभूषणोंसे सजी, सदा कृष्णभावमें लकित रहनेवाली, मधुर स्वरसे श्रीराधाकृष्णका निरन्तर गुणगान करनेवाली तथा श्रीकृष्णको ही प्रियतम एवं वल्लभरूपमें देखनेवाली श्रीचित्रलेखा सखीका मैं भजन करता हूँ। जिसकी सोनेके समान शरीरकी कान्ति है, जो लाल वस्त्र धारण करती हैं, सुन्दर कमलके समान जिनके नेत्र हैं, सुन्दर आभूषणोंसे जिनका शरीर शोभायमान है, कोकिलके समान सुमधुर स्वरमें बोलती हैं, उन सुन्दर वेषवाली, चन्द्रवदनी, श्रीकृष्णकी निज दासी श्रीमतीजीकी मैं वन्दना करता हूँ। वृन्दावनेश्वर श्रीकृष्णकी निज सेवामें ही सुख माननेवाली दासी, रम्य, सुन्दर नील वसन धारण करनेवाली, नाना प्रकारसे विभूषित शरीरवाली, फूले हुए कमलके समान नेत्रोंवाली, सुन्दर रवाब नामक वाद्ययन्त्र लेकर सब रागोंमें मनोज्ञ गान करनेवाली, अत्यन्त रमणीय चन्द्रा सखीको मैं भजता हूँ। जो सोनेके समान पीले रंगके वस्त्र धारण करती हैं, और उपांग नामक बाजा बजाती हैं, मणिमय आभूषणोंसे जिनके अंग सुशोभित हैं, किसलयके समान

जिनके कोमल नेत्र हैं, सोनेके समान जिनके अंग सुशोभित हैं, उन स्तुतियोग्य हरिप्रियाको मैं भजता हूँ। जो रवाब नामक वाद्ययन्त्रको सुन्दरतापूर्वक बजाती हैं, सब रागोंको भलीभाँति गाती हैं, सुन्दर मणिमय कुण्डल धारण करती हैं, शरत्कालीन पूर्णचन्द्रके समान जिनका आनन है, जो सुन्दर रत्नोंसे जटित श्रेष्ठ आभूषण पहनती हैं, जो सुन्दर शुभ्र रेशमी वस्त्र धारण क़रती हैं, उन सोनेके समान दीप्त शरीरवाली कल्याणी मदनसुन्दरीका मैं भजन करता हूँ। जो गानेके समय सुन्दर तान लेना जानती हैं, भ्रमरके समान मधुर कण्ठवाली हैं, अत्यन्त प्रवीण हैं, जगद्वन्द्य हैं, चञ्चल कमलके समान नेत्रोंवाली और चन्द्रमुखी हैं, उन पीत वसनधारिणी, मुरलीवादन करनेवाली, समस्त गुणोंसे पूर्ण, सुखमयी, सेवनीया, नवयौवना, गौरांगी श्रीविशाखा सखीको मैं भजता हूँ। जो सुन्दर स्वर्णाभूषणोंसे भूषित, सुन्दर वेषधारिणी, मधुर संगीत–विद्याकी महापण्डिता, श्रेष्ठ वंशीके द्वारा सुमधुर गान करनेवाली, सुन्दर स्वर्णकी–सी अंगकान्तिसे युक्त, शुक्ल वस्त्रधारिणी, श्रेष्ठ एवं मनोहारिणी हैं, उन श्रीप्रियाजीको मैं भजता हूँ। जो श्रीराधाकी निज दासीके रूपमें हैं, तथा सदा सुन्दर स्वरोंके वाद्ययन्त्रको धारण करती हैं, मनोज्ञ स्वर्णाभरणोंसे भूषित हैं, सुन्दर शरीर तथा कमलके–से नेत्रोंवाली हैं, संगीतमें मधुर हैं, श्रीकृष्णके चरणकमलकी भ्रमरी हैं, कृष्ण वसन परिधान करती हैं, उन मनोहारिणी शैब्या सखीका ध्यान करता हूँ। जो तप्त स्वर्णकी–सी कान्तिवाली, शुक्ल वस्त्रधारिणी और तिलके पुष्पके समान सुन्दर नासिकावाली हैं; जिनके कण्ठका स्वर कोयलके स्वरके समान मधुर है, जिनका शरीर सुन्दर स्वर्णाभूषणोंसे सुसज्जित है तथा जो युगलसरकार श्रीराधाकृष्णकी चरण–सेवामें तत्पर रहती हैं, उन सुन्दरी मधुमती सखीको मैं भजता हूँ। जिनके शरीरपर रत्नाभूषण सुशोभित हैं, जो अंग–लावण्य और रूपसे भव्य हैं, जिन्होंने अपनी शोभासे कुसुमोंकी कान्तिको जीत लिया है, जो संगीत–विद्याकी रसिक और उसमें सुनिपुण हैं, तान और लयकी विशेषज्ञा हैं, सारंगीपर गान करती हैं, सोनेके समान दीप्त देहवाली हैं, और सदा श्रीकृष्णकी सेवामें रत रहती हैं, उन सुन्दर वेषवाली, रंगीन वस्त्र धारण करनेवाली चन्द्रमुखी पद्मा सखीकी मैं वन्दना करता हूँ। बारंबार मृदंगवादन करनेवाली, रसालापस्वरूपा तथा एकमात्र रस और प्रेमसे युक्त शशिरेखाकी भी मैं वन्दना करता हूँ। जो नानाप्रकारके वाद्ययन्त्रोंके बजानेमें विशारद हैं, सुन्दर शरीरवाली हैं, रेशमी वस्त्रसे ढकी रहती हैं तथा

विकसित कमलके समान जिनके नेत्र हैं, उन जगन्मोहिनी, भव्यस्वरूपा, सुखमयी, वाद्ययन्त्रोंपर गान करनेवाली, मधुर स्वरसे युक्त, लावण्य–सारसे युक्त, सर्वश्रेष्ठ एवं वरणीय श्रीशशिरेखाका मैं ध्यान करता हूँ। जो गान करते समय उत्तम शब्द करनेवाले 'स्वरमण्डल' नामक शोभायुक्त वाद्ययन्त्रको सदा धारण करती हैं, मधुर सुरवाली हैं, सुन्दर लाल वस्त्र धारण करती हैं, परमा सुन्दरी हैं, रजत और स्वर्णकी सम्मिलित कान्तिको धारण करती हैं, श्रेष्ठ आभूषणोंसे युक्त अंगों द्वारा सदा सुशोभित होती हैं तथा सदा परम आह्लादमें मग्न होकर भी श्रीयुगलमूर्तिकी सेवामें रत रहती हैं, ऐसी सर्वश्रेष्ठ श्रीभद्रा सखीका मैं ध्यान करता हूँ। जो राधाकृष्णके युगल पदारविन्दकी भ्रमरी हैं, तथा भ्रमरके समान उस पदारविन्दकी चाह रखती हैं, जिनके मनोहर अंग नाना प्रकारके आभूषणोंसे भूषित हैं, जो सुन्दर लाल वस्त्र धारण करती हैं और सोनेके केयूरादिसे सुशोभित, सोनेके समान दीप्त शरीरधारिणी, सुखमयी एवं सर्वांग शोभासे युक्त हैं, उन निरन्तर कृष्णभावसे सुशोभित कल्याणी रसप्रियाका ध्यान करता हूँ। कोकिल और भ्रमरके समान मधुर स्वरमें गान करनेवाली तथा तुम्बुरी (तानपूरा) नामक सुन्दर वाद्ययन्त्रको धारण करनेवाली, हरिद्राके समान पीत वर्णकी मञ्जुल अंगकान्तिसे युक्त तथा शुक्ल रेशमी वस्त्र पहननेवाली वनप्रियाको मैं भजता हूँ।

इस प्रकार क्रमपूर्वक ललिता आदिका ध्यान करके तथा पाद्य, अर्घ्य एवं पुष्प–गन्ध आदि उपचारोंद्वारा विधिवत्, भक्तियुक्त होकर नामके आदिमें प्रणव लगाकर और अन्तमें उनके नामका चतुर्थी विभक्त्यन्त रूपमें प्रयोग करते हुए 'नमः' जोड़कर तत्तद् मन्त्रके द्वारा उस कमलदलके पश्चिमसे आरम्भ करके ललिता आदि सखियोंकी पूजा करे।

एक सौ अट्ठाईस सखियोंके नाम तथा उन्हें नमस्कार

श्रीसदाशिव बोले—पश्चात् प्रत्येक कमलदलमें क्रमशः आठ–आठकी पूजा करे। वे सखियाँ संख्यामें एक सौ अट्ठाईस* हैं। उनके नाम कहता हूँ—सुनिये। इन्दुमुखी, रसज्ञा, शुभदा, सुमुखी, बल्लवी, चन्द्रिका, चारुचतुरा, सुचञ्चला, मधुरा, हस्तकमला, मधुरभाविनी, विलासिनी, रसवती,

---

* मूल श्लोकमें १२८ संख्या लिखी है, परंतु गणना करनेपर १०६ ही होती है। शायद कोई श्लोक छूटे हों या इस श्लोकमें ही भूल रही हो।

खञ्जनलोचना, सुखदा, चम्पकलिका, रसदा, रसमञ्जरी, सुमञ्जरी, शीला, चन्द्रा, चन्द्रप्रभावती, वासन्ती, मालती, जाती, चन्द्रकान्ति, सुकुन्तला, रम्भा, भ्रमरगम्भीरा, सुशीला, सुवेशिनी, आमलकी, सुधाकण्ठी, श्रिता, श्रीरतिप्रिया, शुकप्रिया, मधुकरी, सुवेशा, अमृतोद्भवा, मुरलीवल्लभा, वृन्दा, पारिजातप्रिया, शुभा, पञ्चस्वरा, रत्नमाला, मदिरा, रासबल्लवी, मातंगगमनी, तारावती, कुण्डलधारिणी, केशरी, मित्रविन्दा, लक्षणा, अच्युतमालिका, मायावती, कौशिकी, कोमलांगी, सुचन्दनी, पीयूषभाषिणी, सत्यवती, कुञ्जवासिनी, कपोतमालिका, लोपामुद्रा, किंशुकप्रिया, दलावती, कुंकुमा, कमला, मदालसा, तिलोत्तमा, सावित्री, बहुला, प्रियवादिनी, मुक्तावली, चित्ररेखा, सुमित्रा, लोलकुण्डला, अरुन्धती, चित्रवती, श्रीरक्ता, पद्मगन्धिनी, मेनका, कलिका, रंगकेतकी, काममूर्च्छनी, कुमुदप्रिया, तानज्ञा, नृत्यविलासिनी, हीरावती, हारकण्ठी, सिंहमध्या, सुलोचना, नन्दव्या, आनन्दकलिका, सुनन्दा, आनन्ददायिनी, कुरंगाक्षी, सुश्रोणी, केलिलोला, प्रियंवदा, श्यामाराध्या, श्यामसेव्या, कस्तूरी, मानभञ्जिनी, विचित्रवसना, रत्नमञ्जीरा, मञ्जुकिंकिणी, पिकस्वरा, भृंगगाना तथा रासविहारिणी। तत्पश्चात् पूजा करनेवालोंको श्रीकृष्णके दक्षिणमें ध्यान, पाद्य–अर्घ्यादिसे भलीभाँति यत्नपूर्वक चन्द्रावलीकी पूजा करनी चाहिये। (अथ ध्यानम्) स्वर्ण वर्णवाली, मधुर स्वरसे विभूषित, चन्द्रवदनी, गान्धर्वविद्यामें रत रहनेवाली, नाना प्रकारके आभूषणोंसे विभूषित मधुर अंगोंवाली, सुन्दर जाती और मल्लिका पुष्पोंकी माला धारण करनेवाली, सुन्दर वीणा, वाद्य बजानेवाली, श्रेष्ठ शरीरपर चित्रित वस्त्र धारण करनेवाली, सुन्दर चिबुकवाली, श्रीकृष्णमें लीन रहनेवाली सुन्दरी चन्द्रावली सखीका मैं ध्यान करता हूँ।

श्रीराधिकार्पणमस्तु।
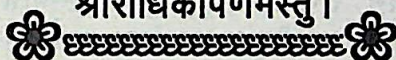
मुनीन्द्र–वृन्द–वन्दिते त्रिलोक–शोक–हारिणि
प्रसन्न–वक्त्र–पंकजे निकुञ्ज–भू–विलासिनि।
व्रजेन्द्र–भानु–नन्दिनि व्रजेन्द्र–सूनु–संगते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। १।।

लोक–त्रय शोक–निवारिणि जो, मुनिजन करते जिनका वन्दन।
करतीं निकुञ्जमें जो विलास, अम्बुज–सा जिनका विकच वदन।।
वृषभानु–लली, व्रजपति–किशोरसे रहता जिनका नित्य मिलन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। १।।

अशोक–वृक्ष–वल्लरी–मण्डप–स्थिते
प्रवाल–बालपल्लव–प्रभारुणाङ्घ्रि–कोमले।
वराभय–स्फुरत्–करे प्रभूत–सम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। २।।

जिनका अशोककी छायामें, वल्लरी–वितान तले आसन।
किसलय–कोमल, मूँगेकी आभामय जिनके मृदु–अरुण चरन।।
वर–अभय–दानको उत्सुक, जो सदा सकल सम्पदा सदन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। २।।

अनंग–रंग–मंगल–प्रसंग–भंगुरभ्रुवोः
सविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्त–वाण–पातनैः।
निरन्तरं वशीकृत–प्रतीत–नन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। ३।।

बाँकी भृकुटीमें काल–नटीके मंगलमय नव–नव नर्तन,
सुन्दर विभ्रम, संभ्रम सुचारु संवलित दृगोंके शर–पातन–
से जिनके, प्रीति–प्रतीति भरे वशमें सदैव हैं नँदनंदन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। ३।।

तडित्–सुवर्ण–चम्पक–प्रदीप्त–गौर–विग्रहे
मुख–प्रभा–परास्त–कोटि–शारदेन्दुमण्डले।
विचित्र–चित्र–संचरच्चकोर–शाव–लोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। ४।।

चपला–चामीकर–चम्पक–सी जिनके तनकी आभा उज्ज्वल।
मुखकी शोभासे कोटि–कोटि जित–लज्जित शारद–शशिमण्डल।।
नाना अनुपम क्रीडावाले, जिनके चकोर, शिशु–से लोचन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। ४।।

मदोन्मदातियौवने प्रमोद–मान–मण्डिते
प्रियानुराग–रञ्जिते कला–विलास–पण्डिते।
अनन्य–धन्य–कुञ्ज–राज्य–काम–केलि–कोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। ५।।

मदमत्त दिव्य यौवनकी श्री, आमोद–मानसे हैं मण्डित।
प्रिय–प्रेम–रंगमें रँगी हुई, हैं सकल–विलास–कला–पण्डित।।
जो धन्य–अनन्य निकुञ्ज–राज्यमें काम–कला–विज्ञान–अयन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। ५।।

अशेष–हाव–भाव–धीर–हीर–हार–भूषिते
प्रभूतशातकुम्भकुम्भ–कुम्भि–कुम्भ–सुस्तनि।
प्रशस्त–मन्द–हास्य–चूर्ण–पूर्ण–सौख्य–सागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। ६।।

प्रति हाव–भावकी उदधि धीर, हीरेका उरपर हार सुघर।
कञ्चनके भारी कलशोंसे करि–कुम्भ–सदृश कुच–युग सुन्दर।।
मुसकान मनोहर मद–मन्द, सुख–सुषमाकी जो सिंधु गहन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। ६।।

मृणाल–बाल–वल्लरी–तरंग–दोर्लते
लताग्र–लास्य–लोल–नील–लोचनावलोकने।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ–मुग्ध–मोहनाश्रये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। ७।।

अरविन्द–नाल–सी जल–प्रवाहमें लहराती भुज–लता युगल।
चललता–शिखर सम लोल, असित नयनोंका अवलोकन–कौशल।।
सुन्दर क्रीडा–चापल्य–मिलनवाले जिनके आश्रित मोहन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। ७।।

सुवर्ण–मालिकाञ्चित–त्रिरेख–कम्बु–कण्ठग–
त्रिसूत्र–मंगलीगुण–त्रिरत्न–दीप्त–दीधिते।
सलोल–नीलकुन्तल–प्रसून–गुच्छ–गुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। ८।।
शोभा त्रिरेखकी कम्बु–कण्ठमें, जहाँ कनक–माला न्यारी।
रत्नत्रय–दीप्तरश्मियोंसे मण्डित त्रिसूत्र मंगलकारी
नागिन–सी काली लहराती वेणीमें जिनके गुँथे सुमन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। ८।।

नितम्ब–बिम्ब–लम्बमान–पुष्प–मेखला–गुणे
प्रशस्त–रत्न–किंकिणी–कलाप–मध्य–मञ्जुले।
करीन्द्र–शुण्ड–दण्डिका–वरोह–सौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। ९।।
मेखला पुष्पकी लोट रही पृथ–गोल नितम्बोंके ऊपर।
किंकिणी मनोरम रत्नोंकी मञ्जुल कटिमें करती सुस्वर।।
जिनके सुषमामय ऊरु–युगलकी करिवर–कर–सी सुठि सुढरन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। ९।।

अनेक–मन्त्रनाद–मञ्जु–नूपुरारवस्खलत्–
समाज–राजहंस–वंश–निक्वणातिगौरवे।
विलोलहेमवल्लरी–विडम्बि–चारु–चङ्क्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। १०।।
जिनके नूपुरकी रुनझुनमें नाना मन्त्रोंका मधुर गान।
है जिससे राजमरालोंके कल कूजनका भी मिटा मान।।
गतिशील हेमकी लता सदृश, जिनका अति सुन्दर पद–क्षेपन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। १०।।

अनन्त–कोटि–विष्णुलोक–नम्र–पद्मजार्चिते
हिमाद्रिजा–पुलोमजा–विरिञ्चजा–वरप्रदे।
अपार–सिद्धि–वृद्धि–दिग्ध–सत्पदांगुली–नखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। ११।।

स्वामिनी अमित वैकुण्ठोंकी श्रीलक्ष्मी शीश झुकाती हैं।
शैलेन्द्र–सुता, शारदा, शची जिनके हाथों वर पाती हैं।।
जिनके मन–हरण चरण–नखसे सम्पूर्ण सिद्धिका संवर्द्धन।
कब कृपा कटाक्षोंमें भरकर फेरेंगी मेरी ओर नयन।। ११।।

मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेद–भारतीश्वरि प्रमाण–शासनेश्वरि।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद–काननेश्वरि
व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते।। १२।।

यज्ञोंकी, क्रिया, स्वधाकी भी, ईश्वरी समस्त सुधाशनकी।
स्वामिनी त्रिवेदोंकी वाणीकी, न्याय–निरूपित दर्शनकी।।
हे रमेश्वरी, वसुधेश्वरि हे, स्वामिनि प्रमोद–वनकी ललाम।
व्रजकी स्वामिनि, व्रजकी रानी, श्रीराधे ! तुमको है प्रणाम।। १२।।

इतीदमद्भुतं स्तवं निशम्य भानुनन्दिनी
करोतु संततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम्।
भवेत्तदैव संचित–त्रिरूप–कर्म–नाशनं
भवेत्तदा व्रजेन्द्र–सूनु–मण्डल–प्रवेशनम्।। १३।।

वृषभानु–नन्दिनी श्रीराधे सुन अद्भुत यह निज कीर्त्ति–कथन।
लें बना सदाके लिये दासको कृपा–कटाक्षोंका भाजन।।
तत्क्षण संचित तीनों प्रकारके कर्म भस्मवत् हों अशेष।
व्रजनन्दनकी लीलाओंमें मिल जाये जनको फिर प्रवेश।। १३।।

राकायां च सिताष्टम्यां दशम्यां च विशुद्धधीः
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधक सुधीः।। १४।।

त्रयोदशी, एकादशी, दशमी, शुक्ला आठ।
राकाको साधक सुधी करे शुद्ध मन पाठ।। १४।।

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः
राधाकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात् प्रेमलक्षणा।। १५।।

अपने वाञ्छित फल सभी पाये साधक व्यक्ति।
राधा–कृपा–कटाक्षसे, प्रेम–लक्षणा भक्ति।। १५।।

ऊरुदघ्ने नाभिदघ्ने हृद्दघ्ने कण्ठदघ्नके।
राधाकुण्डजले स्थित्वा यः पठेत् साधकः शतम्।। १६।।
ऊरु, नाभि, हिय, कण्ठतक, राधाकुण्ड मँझार।
अंग डुबाये सलिलमें, पढ़ता जो सौ बार।। १६।।

तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् वाक्सामर्थ्यं ततो लभेत्।
ऐश्वर्यं च लभेत्साक्षाद् दृशा पश्यति राधिकाम्।। १७।।
हों सब इच्छा पूर्ण, हो वचन सिद्धि तत्काल।
विभंव मिले, दे राधिका दर्शन करें निहाल।। १७।।

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम्।
येन पश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्यामसुन्दरम्।। १८।।
रीझ तुरत देंगी अतुल वर राधिका कृपाल।
हो जाते सम्मुख प्रकट प्रिय उनके नँदलाल।। १८।।

नित्यलीलाप्रवेशं च ददाति हि व्रजाधिपः।
अतः परतरं प्राप्यं वैष्णवानां न विद्यते।। १६।।
व्रजपति देते नित्यकी निज लीलामें ठौर।
नहीं वैष्णवोंके लिये इससे बढ़ कुछ और।। १६।।

इति ऊर्ध्वम्नायतन्त्रे शिवगौरीसंवादे श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराजः सम्पूर्णः।

हमारे प्रकाशन

१. श्रीभाईजी---एक अलौकिक विभूति (पू० श्रीभाईजी एवं श्रीसेठजीकी संक्षिप्त जीवनी) संयोजन श्रीश्यामसुन्दरजी दुजारी		६०.००
२. भाईजी चरितामृत (पू० भाईजीके शब्दोंमें उनके जीवन प्रसंग) (संयोजन श्रीश्यामसुन्दजी दुजारी)		
३. सरस पत्र	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
४. व्रजभावकी उपासना	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	२५.००
५. परमार्थकी पगडंडियाँ	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
६. सत्संगवाटिकाके बिखरे सुमन	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
७. वेणुगीत	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३५.००
८. समाज किस ओर जा रहा है	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
६. प्रभुको आत्मसमर्पण	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३०.००
१०. भगवत्कृपा	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	५.००
११. श्रीराधाष्टमी जन्म-व्रत महोत्सव	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	५.००
१२. शान्तिकी सरिता	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	
१३. रासपंञ्चाध्यायी	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	३९.००
१४.आस्तिकताकी आधार-शिलाएँ	श्रीराधा बाबा	३५.००

पुस्तकें एवं पू० श्रीभाईजीके प्रवचनोंके एवं पदोंके कैसेट प्राप्ति स्थान

गोरखपुर :	गीतावाटिका प्रकाशन पो० गीतावाटिका, पिन०-२७३००६ फोन-०५५१-३१२४४२
कलकत्ता :	श्रीसुशीलकुमारजी मुँधड़ा ८, इण्डिया एक्सचेंज प्लेस (८ वाँ तल्ला)
वाराणसी :	श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार स्मृति ट्रस्ट बी. २७/८२, दुर्गाकुण्ड रोड
गाजियाबाद :	श्रीशिवकुमारजी दुजारी के. आई० १५५, कविनगर
मुम्बई :	भारतीय ग्रामोद्योग वस्त्र भण्डार सिंघानिया वाडी, १८७ दादीसेठ अग्यारी लेन, फोन० -२०१३८२१

नोट : कैसेटकी विस्तृत सूची उपरोक्त पतोंपर प्राप्त की जा सकती है।